व्याकरण खण्ड

किसी भी विकासशील भाषा में एकरूपता बनाए रखने के लिए सुसम्बद्ध एवं प्रामाणिक व्याकरण की आवश्यकता होती है। यह हमें भाषा का शुद्ध उपयोग – बोलना, लिखना, पढ़ना आदि सिखाता है। संस्कृत भाषा एवं साहित्य का अध्यापन करने के लिए संस्कृत–व्याकरण का ज्ञान आवश्यक है। संस्कृत व्याकरण में पाणिनि रचित 'अष्टाध्यायी' सर्वमान्य एवं प्रामाणिक व्याकरण ग्रन्थ है।

संस्कृत भाषा का वैज्ञानिक दृष्टि से बहुत महत्त्व है। कालक्रम में संस्कृत का स्वरूप भी बदला है। इसीलिए जो प्राचीन वेदों की भाषा है उसमें और बाद की लौकिक संस्कृत यानी साहित्यिक ग्रंथों में प्रयुक्त संस्कृत में भी अंतर दिखता है। लौकिक संस्कृत के प्रयोग में भी समय के साथ अंतर आया है, लेकिन वह कमोबेश पाणिनि के व्याकरण का पालन करता है।

संस्कृत की ध्वनियों को स्वर (Vowel) और व्यंजन (Consonant) में बाँटा जाता है।

स्वर वर्ण – संस्कृत वर्णमाला में 13 स्वर हैं। यथा– अ,आ,इ,ई,उ,ऊ,ऋ,ॠ,लृ,ए,ऐ,ओ,औ। स्वर वह ध्वनि है जिसके उच्चारण में वायु बिना रुकावट के मुँह से बाहर निकलती है। स्वर के तीन भेद हैं –

ह्रस्व – जिनको बोलने में एक मात्रा का समय लगता है उसे ह्रस्व कहते हैं। जैसे – अ, इ, उ, ऋ।

दीर्घ – जिनको बोलने में दो मात्रा का समय लगता है उसे दीर्घ कहते हैं। जैसे – आ, ई, ऊ, ॠ।

प्लुत् – जिनको बोलने में तीन मात्रा का समय लगता है उसे प्लुत कहते हैं। इसका प्रयोग प्रायः पुकारने में होता है। जैसे – हे राम.......3, हे प्रभो...... 3 !

व्यञ्जन वर्ण – व्यञ्जन के उच्चारण में वायु के मुँह से निकलने में थोड़ी रुकावट आती है। इसके लिए स्वर की सहायता लेनी पड़ती है। वर्णमाला में 33 व्यञ्जन वर्ण हैं।

इसके अलावा वर्णों को कई अन्य आधारों पर भी वर्गीकृत किया जाता है। सबसे अधिक प्रचलित है व्यञ्जनों का उच्चारण के स्थान (Points of articulation) के आधार पर वर्गीकरण। यह मुख्यतः 5 प्रकार का बताया गया है – कंठ्य, तालव्य, मूर्धन्य, दन्त्य और ओष्ठ्य।

कंठ्य – अ, आ, कवर्ग (क् ख् ग् घ् ङ्), ह् और विसर्ग कंठ से बोले जाते हैं। इसलिए इन्हें कंठ्य कहते हैं।

तालव्य – इ, ई, चवर्ग (च् छ् ज् झ् ञ्), य् और श् तालु से बोले जाते हैं। इसलिए इन्हें तालव्य कहते हैं।

मूर्धन्य – ऋ, दीर्घ ऋ, टवर्ग (ट् ठ् ड् ढ् ण्), र् और ष् मूर्धा से बोले जाते हैं। इसलिए इन्हें मूर्धन्य कहते हैं।

दन्त्य – लृ, तवर्ग (त् थ् द् ध् न्), ल् और स् दाँत से बोले जाते हैं। इसलिए इन्हें दन्त्य कहते हैं।

ओष्ठ्य –उ, ऊ, पवर्ग (प् फ् ब् भ् म्) आदि ओंठ से बोले जाते हैं। इसलिए इन्हें ओष्ठ्य कहते हैं।

ध्वनियों के उच्चारण में होनेवाली क्रिया को प्रयत्न कहते हैं। उच्चारण के क्रम में अंदर से निकलनेवाली वायु अलग–अलग प्रकार के प्रयत्न से बाहर आती है। उससे उनका स्वरूप बदल जाता है। प्रयत्न के आधार पर कुछ महत्त्वपूर्ण विभाजन हैं –

स्पर्श वर्ण (Stop/Occlusive) –इसमें वाग्यंत्र के दो अवयवों का कहीं न कहीं स्पर्श होता है।

संघर्षी या उष्म वर्ण (Fricative/Spirant) – इसके उच्चारण में वाग्यंत्र के अवयव एक दूसरे के इतने करीब आ जाते हैं कि अंदर की वायु दोनों के बीच रगड़ खाकर निकलती है। इस कारण उच्चारण में घर्षण की ध्वनि होती है।

अंतस्थ वर्ण (Semivowel) – इसके उच्चारण में व्यंजनों की तरह मुँह न पूरा बंद होता है और न स्वरों की तरह पूरा खुला रहता है। ये स्वर और व्यंजन के बीच के वर्ण हैं।

नासिक्य/अनुनासिक – इसके उच्चारण में मुख के साथ नाक से भी सहायता ली जाती है। वर्ग के पंचम वर्ण अनुनासिक हैं।

स्वरतंत्रियों के आधार पर व्यंजन के दो भेद हैं –

घोष वर्ण – इसके उच्चारण में स्वरतंत्रियों के बहुत पास आ जाने से अंदर की वायु अवरुद्ध हो जाती है। अवरुद्ध वायु के वेग से स्वरतंत्रियों में कम्पन पैदा होता है। वर्ग के तृतीय, चतुर्थ और पंचम वर्ण तथा ह घोष वर्ण हैं।

अघोष वर्ण – इसके उच्चारण के समय स्वरतंत्रियाँ खुली रहती हैं और वायु बिना रुकावट के बाहर जाती है। कम्पन नहीं होता है। वर्ग के प्रथम, द्वितीय वर्ण और विसर्ग अघोष हैं।

प्राण का अर्थ है श्वास या वायु की शक्ति। प्राणतत्त्व के आधार व्यंजन के दो भेद हैं –

अल्पप्राण – इसके उच्चारण में वायु का कम प्रयोग होता है। जैसे – वर्ग के प्रथम, तृतीय और पंचम वर्ण

महाप्राण – इसके उच्चारण में वायु का प्रयोग अधिक होता है। जैसे – वर्ग के द्वितीय और चतुर्थ वर्ण।

उपर्युक्त व्यंजन वर्णों के अलावा अनुस्वार और विसर्ग दो अयोगवाह कहलाते हैं। इसका कारण यह है कि इनका वर्णों के भीतर उल्लेख यानी योग नहीं होने पर भी ये उनका कार्य वहन करते हैं।

संस्कृत की 48 ध्वनियाँ इस प्रकार हैं – 13 स्वर और 35 व्यंजन (33 वर्ण + 2 अयोगवाह)

13 स्वर वर्ण	–	अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ए ऐ ओ औ
25 स्पर्श वर्ण	–	क् ख् ग् घ् ङ् – कंठ्य

च् छ् ज् झ् ञ्	–	तालव्य
ट् ठ् ड् ढ् ण्	–	मूर्धन्य
त् थ् द् ध् न्	–	दन्त्य
प् फ् ब् भ् म्	–	ओष्ठ्य
4 अंतस्थ वर्ण	–	य् र् ल् व्
3 अघोष उष्म वर्ण	–	श् ष् स्
1 घोष उष्म वर्ण	–	ह्
1 अघोष ऊष्म	–	विसर्ग
1 शुद्ध अनुनासिक	–	अनुस्वार

शब्दरूप

अकारान्त पुंल्लिङ्ग

बालक

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	बालकः	बालकौ	बालकाः
द्वितीया	बालकम्	बालकौ	बालकान्
तृतीया	बालकेन	बालकाभ्याम्	बालकैः
चतुर्थी	बालकाय	बालकाभ्याम्	बालकेभ्यः
पञ्चमी	बालकात्	बालकाभ्याम्	बालकेभ्यः
षष्ठी	बालकस्य	बालकयोः	बालकानाम्
सप्तमी	बालके	बालकयोः	बालकेषु
सम्बोधन	हे बालक!	हे बालकौ!	हे बालकाः!

जनक, अश्व, मेघ, द्विज, मृग, छात्र, खग इत्यादि शब्दों के रूप बालक के समान चलेंगे।

इकारान्त पुंल्लिङ्ग

हरि (विष्णु)

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	हरिः	हरी	हरयः
द्वितीया	हरिम्	हरी	हरीन्
तृतीया	हरिणा	हरिभ्याम्	हरिभिः
चतुर्थी	हरये	हरिभ्याम्	हरिभ्यः
पञ्चमी	हरेः	हरिभ्याम्	हरिभ्यः
षष्ठी	हरेः	हर्योः	हरीणाम्
सप्तमी	हरौ	हर्योः	हरिषु
सम्बोधन	हे हरे!	हे हरी!	हे हरयः!

मुनि, कवि, विधि, अग्नि इत्यादि शब्दों के रूप हरि के समान चलेंगे।

उकारान्त पुंल्लिङ्ग

गुरु (आचार्य)

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	गुरुः	गुरू	गुरवः
द्वितीया	गुरुम्	गुरू	गुरून्
तृतीया	गुरुणा	गुरुभ्याम्	गुरुभिः
चतुर्थ	गुरवे	गुरुभ्याम्	गुरुभ्यः
पञ्चमी	गुरोः	गुरुभ्याम्	गुरुभ्यः
षष्ठी	गुरोः	गुर्वोः	गुरूणाम्
सप्तमी	गुरौ	गुर्वोः	गुरुषु
सम्बोधन	हे गुरो!	हे गुरू!	हे गुरवः!

साधु, बाहु, शिशु, तरु इत्यादि शब्दों के रूप गुरु के समान चलेंगे।

ऋकारान्त पुंल्लिङ्ग

पितृ (पिता, जनक)

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	पिता	पितरौ	पितरः
द्वितीया	पितरम्	पितरौ	पितॄन्
तृतीया	पित्रा	पितृभ्याम्	पितृभिः
चतुर्थी	पित्रे	पितृभ्याम्	पितृभ्यः
पञ्चमी	पितुः	पितृभ्याम्	पितृभ्यः
षष्ठी	पितुः	पित्रोः	पितॄणाम्
सप्तमी	पितरि	पित्रोः	पितृषु
सम्बोधन	हे पितः!	हे पितरौ!	हे पितरः!

भ्रातृ, जमातृ इत्यादि शब्दों के रूप पितृ के समान चलेंगे।

आकारान्त स्त्रीलिङ्ग

रमा (लक्ष्मी)

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	रमा	रमे	रमाः
द्वितीया	रमाम्	रमे	रमाः
तृतीया	रमया	रमाभ्याम्	रमाभिः
चतुर्थी	रमायै	रमाभ्याम्	रमाभ्यः
पञ्चमी	रमायाः	रमाभ्याम्	रमाभ्यः
षष्ठी	रमायाः	रमयोः	रमाणाम्
सप्तमी	रमायाम्	रमयोः	रमासु
सम्बोधन	हे रमे!	हे रमे!	हे रमाः!

शाला, प्रजा, कन्या, विद्या, कक्षा इत्यादि शब्दों के रूप रमा के समान चलेंगे।

इकारान्त स्त्रीलिङ्ग

मति (बुद्धि)

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	मतिः	मती	मतयः
द्वितीया	मतिम्	मती	मतीः
तृतीया	मत्या	मतिभ्याम्	मतिभिः
चतुर्थी	मत्यै, मतये	मतिभ्याम्	मतिभ्यः
पञ्चमी	मत्याः, मतेः	मतिभ्याम्	मतिभ्यः
षष्ठी	मत्याः, मतेः	मत्योः	मतीनाम्
सप्तमी	मत्याम्, मतौ	मत्योः	मतिषु
सम्बोधन	हे मते!	हे मती!	हे मतयः!

श्रुति, भूति, गति, शान्ति, प्रकृति इत्यादि शब्दों के रूप मति के समान चलेंगे।

ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग

नदी

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	नदी	नद्यौ	नद्यः
द्वितीया	नदीम्	नद्यौ	नदीः
तृतीया	नद्या	नदीभ्याम्	नदीभिः
चतुर्थी	नद्यै	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
पञ्चमी	नद्याः	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
षष्ठी	नद्याः	नद्योः	नदीनाम्
सप्तमी	नद्याम्	नद्योः	नदीषु
सम्बोधन	हे नदि!	हे नद्यौ!	हे नद्यः!

जननी, पत्नी, पुत्री, पृथ्वी इत्यादि शब्दों के रूप नदी के समान चलेंगे।

उकारान्त स्त्रीलिङ्ग

धेनु (गाय)

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	धेनुः	धेनू	धेनवः
द्वितीया	धेनुम्	धेनू	धेनूः
तृतीया	धेन्वा	धेनुभ्याम्	धेनुभिः
चतुर्थी	धेनवे/धेन्वै	धेनुभ्याम्	धेनुभ्यः
पञ्चमी	धेनोः/धेन्वाः	धेनुभ्याम्	धेनुभ्यः
षष्ठी	धेनोः/धेन्वाः	धेन्वोः	धेनूनाम्
सप्तमी	धेनौ	धेन्वोः	धेनुषु
सम्बोधन	हे धेनो!	हे धेनू!	हे धेनवः!

रेणु (धूल), तनु (शरीर), रज्जु (रस्सी) इत्यादि शब्दों के रूप धेनु के समान चलेंगे।

ऋकारान्त स्त्रीलिङ्ग

मातृ (माता)

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	माता	मातरौ	मातरः
द्वितीया	मारतम्	मातरौ	मातॄः
तृतीया	मात्रा	मातृभ्याम्	मातृभिः
चतुर्थी	मात्रे	मातृभ्याम्	मातृभ्यः
पञ्चमी	मातुः	मातृभ्याम्	मातृभ्यः
षष्ठी	मातुः	मात्रोः	मातॄणाम्
सप्तमी	मातरि	मात्रोः	मातृषु
सम्बोधन	हे मातः!	हे मातरौ!	हे मातरः!

दुहितृ (बेटी), स्वसृ (बहन) इत्यादि शब्दों के रूप ठीक मातृ के समान चलेंगे।

अकारान्त नपुंसकलिङ्ग

फल

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	फलम्	फले	फलानि
द्वितीया	फलम्	फले	फलानि
तृतीया	फलेन	फलाभ्याम्	फलैः
चतुर्थी	फलाय	फलाभ्याम्	फलेभ्यः
पञ्चमी	फलात्	फलाभ्याम्	फलेभ्यः
षष्ठी	फलस्य	फलयोः	फलानाम्
सप्तमी	फले	फलयोः	फलेषु
सम्बोधन	हे फल!	हे फले!	हे फलानि!

ज्ञान, धन, वस्त्र, पुष्प, गृह इत्यादि शब्दों के रूप फल के समान चलेंगे।

इकारान्त नपुंसकलिङ्ग

वारि (जल)

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	वारि	वारिणी	वारीणि
द्वितीया	वारि	वारिणी	वारीणि
तृतीया	वारिणा	वारिभ्याम्	वारिभिः
चतुर्थी	वारिणे	वारिभ्याम्	वारिभ्यः
पञ्चमी	वारिणः	वारिभ्याम्	वारिभ्यः
षष्ठी	वारिणः	वारिणोः	वारीणाम्
सप्तमी	वारिणि	वारिणोः	वारिषु
सम्बोधन	हे वारि, वारे!	हे वारिणी!	हे वारीणि!

अस्थि, दधि, अक्षि इत्यादि शब्दों के रूप फल के समान चलेंगे।

उकारान्त नपुंसकलिङ्ग

मधु (शहद)

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	मधु	मधुनी	मधूनि
द्वितीया	मधु	मधुनी	मधूनि
तृतीया	मधुना	मधूभ्याम्	मधुभिः
चतुर्थी	मधुने	मधूभ्याम्	मधूभ्यः
पञ्चमी	मधुनः	मधूभ्याम्	मधूभ्यः
षष्ठी	मधुनः	मधुनोः	मधूनाम्
सप्तमी	मधुनि	मधुनोः	मधुषु
सम्बोधन	हे मधु!	हे मधुनी!	हे मधूनि!

दारु (लकड़ी), वस्तु, अम्बु (पानी), वसु (धन), अश्रु (आँसू) इत्यादि शब्दों के रूप मघु के समान चलेंगे।

हलन्त पुंल्लिङ्ग

राजन्

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	राजा	राजानौ	राजानः
द्वितीया	राजानम्	राजानौ	राज्ञः
तृतीया	राज्ञा	राजभ्याम्	राजभिः
चतुर्थी	राज्ञे	राजभ्याम्	राजभ्यः
पञ्चमी	राज्ञः	राजभ्याम्	राजभ्यः
षष्ठी	राज्ञः	राज्ञोः	राज्ञाम्
सप्तमी	राज्ञि	राज्ञोः	राजसु
सम्बोधन	हे राजन्!	हे राजानौ!	हे राजानः!

भवत् (आप) पुंल्लिङ्ग

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	भवान्	भवन्तौ	भवन्तः
द्वितीया	भवन्तम्	भवन्तौ	भवतः
तृतीया	भवता	भवद्भ्याम्	भवद्भिः
चतुर्थी	भवते	भवद्भ्याम्	भवद्भ्यः
पञ्चमी	भवतः	भवद्भ्याम्	भवद्भ्यः
षष्ठी	भवतः	भवतोः	भवताम्
सप्तमी	भवति	भवतोः	भवत्सु
सम्बोधन	हे भवन्!	हे भवन्तौ!	हे भवन्तः!

आत्मन् (आत्मा) पुंल्लिङ्ग

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	आत्मा	आत्मानौ	आत्मानः
द्वितीया	आत्मानम्	आत्मानौ	आत्मनः
तृतीया	आत्मना	आत्मभ्याम्	आत्मभिः
चतुर्थी	आत्मने	आत्मभ्याम्	आत्मभ्यः
पञ्चमी	आत्मनः	आत्मभ्याम्	आत्मभ्यः
षष्ठी	आत्मनः	आत्मनोः	आत्मनाम्
सप्तमी	आत्मनि	आत्मनोः	आत्मसु
सम्बोधन	हे आत्मन्!	हे आत्मानौ!	हे आत्मानः!

ब्रह्मन्, अश्मन् (पत्थर), मूर्धन् (सिर) इत्यादि शब्दों के रूप आत्मन् के समान चलेंगे।

सकारान्त पुंल्लिङ्ग

चन्द्रमस्

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	चन्द्रमाः	चन्द्रमसौ	चन्द्रमसः
द्वितीया	चन्द्रमसम्	चन्द्रमसौ	चन्द्रमसः
तृतीया	चन्द्रमसा	चन्द्रमोभ्याम्	चन्द्रमोभिः
चतुर्थी	चन्द्रमसे	चन्द्रमोभ्याम्	चन्द्रमोभ्यः
पञ्चमी	चन्द्रमसः	चन्द्रमोभ्याम्	चन्द्रमोभ्यः
षष्ठी	चन्द्रमसः	चन्द्रमसोः	चन्द्रमसाम्
सप्तमी	चन्द्रमसि	चन्द्रमसोः	चन्द्रमःसु (चन्द्रमस्सु)
सम्बोधन	हे चन्द्रमः!	हे चन्द्रमसौ!	हे चन्द्रमसः!

सुमनस् (अच्छा चित्त वाला) महायशस् (बड़ा यशस्वी), महातेजस् (बड़ी कांति वाला) इत्यादि शब्दों के रूप चन्द्रमस् के समान चलेंगे।

तकारान्त पुंल्लिङ्ग

गच्छत् (जाता हुआ)

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	गच्छन्	गच्छन्तौ	गच्छन्तः
द्वितीया	गच्छन्तम्	गच्छन्तौ	गच्छतः
तृतीया	गच्छता	गच्छद्भ्याम्	गच्छद्भिः
चतुर्थी	गच्छते	गच्छद्भ्याम्	गच्छद्भ्यः
पञ्चमी	गच्छतः	गच्छद्भ्याम्	गच्छद्भ्यः
षष्ठी	गच्छतः	गच्छतोः	गच्छताम्
सप्तमी	गच्छति	गच्छतोः	गच्छत्सु
सम्बोधन	हे गच्छन्!	हे गच्छन्तौ!	हे गच्छन्तः!

धावत् (दौड़ता हुआ), पठत् (पढ़ता हुआ), वदत् (बोलता हुआ), पतत् (गिरता हुआ), भवत् (होता हुआ) इत्यादि शतृ प्रत्यय के शब्दों के रूप गच्छन् के समान चलेंगे।

सर्व (सब) पुंल्लिङ्ग

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	सर्वः	सर्वौ	सर्वे
द्वितीया	सर्वम्	सर्वौ	सर्वान्
तृतीया	सर्वेण	सर्वाभ्याम्	सर्वैः
चतुर्थी	सर्वस्मै	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः
पञ्चमी	सर्वस्मात्	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः
षष्ठी	सर्वस्य	सर्वयोः	सर्वेषाम्
सप्तमी	सर्वस्मिन्	सर्वयोः	सर्वेषु

स्त्रीलिङ्ग

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	सर्वा	सर्वे	सर्वाः
द्वितीया	सर्वाम्	सर्वे	सर्वाः
तृतीया	सर्वया	सर्वाभ्याम्	सर्वाभिः
चतुर्थी	सर्वस्यै	सर्वाभ्याम्	सर्वाभ्यः
पञ्चमी	सर्वस्याः	सर्वाभ्याम्	सर्वाभ्यः
षष्ठी	सर्वस्याः	सर्वयोः	सर्वासाम्
सप्तमी	सर्वस्याम्	सर्वयोः	सर्वासु

नपुंसकलिङ्ग

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	सर्वम्	सर्वे	सर्वाणि
द्वितीया	सर्वम्	सर्वे	सर्वाणि

शेष शब्द के रूप पुंलिंग के अनुसार चलेंगे।

यद् (जो) पुंल्लिङ्ग

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	यः	यौ	ये
द्वितीया	यम्	यौ	यान्
तृतीया	येन	याभ्याम्	यैः
चतुर्थी	यस्मै	याभ्याम्	येभ्यः
पञ्चमी	यस्मात्	याभ्याम्	येभ्यः
षष्ठी	यस्य	ययोः	येषाम्
सप्तमी	यस्मिन्	ययोः	येषु

स्त्रीलिङ्ग

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	या	ये	याः
द्वितीया	याम्	ये	याः
तृतीया	यया	याभ्याम्	याभिः
चतुर्थी	यस्यै	याभ्याम्	याभ्यः
पञ्चमी	यस्याः	याभ्याम्	याभ्यः
षष्ठी	यस्याः	ययोः	यासाम्
सप्तमी	यस्याम्	ययोः	यासु

नपुंसकलिङ्ग

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	यत्	ये	यानि
द्वितीया	यत्	ये	यानि

शेष रूप पुंलिंग के समान होंगे।

इदम् (यह) पुंल्लिङ्ग

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	अयम्	इमौ	इमे
द्वितीया	इमम्	इमौ	इमान्
तृतीया	अनेन	आभ्याम्	एभिः
चतुर्थी	अस्मै	आभ्याम्	एभ्यः
पञ्चमी	अस्मात्	आभ्याम्	एभ्यः
षष्ठी	अस्य	अनयोः	एषाम्
सप्तमी	अस्मिन्	अनयोः	एषु

स्त्रीलिङ्ग

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	इयम्	इमे	इमाः
द्वितीया	इमाम्	इमे	इमाः
तृतीया	अनया	आभ्याम्	आभिः
चतुर्थी	अस्यै	आभ्याम्	आभ्यः
पञ्चमी	अस्याः	आभ्याम्	आभ्यः
षष्ठी	अस्याः	अनयोः	आसाम्
सप्तमी	अस्याम्	अनयोः	आसु

नपुंसकलिङ्ग

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	इदम्	इमे	इमानि
द्वितीया	इदम्	इमे	इमानि

शेष रूप पुंलिंग के समान होते हैं।

एतद् (यह) पुंल्लिङ्ग

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	एषः	एतौ	एते
द्वितीया	एतम्	एतौ	एतान्
तृतीया	एतेन	एताभ्याम्	एतैः
चतुर्थी	एतस्मै	एताभ्याम्	एतेभ्यः
पञ्चमी	एतस्मात्	एताभ्याम्	एतेभ्यः
षष्ठी	एतस्य	एतयोः	एतेषाम्
सप्तमी	एतस्मिन्	एतयोः	एतेषु

स्त्रीलिङ्ग

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	एषा	एते	एताः
द्वितीया	एताम्	एते	एताः
तृतीया	एतया	एताभ्याम्	एताभिः
चतुर्थी	एतस्यै	एताभ्याम्	एताभ्यः
पञ्चमी	एतस्याः	एताभ्याम्	एताभ्यः
षष्ठी	एतस्याः	एतयोः	एतासाम्
सप्तमी	एतस्याम्	एतयोः	एतासु

नपुंसकलिङ्ग

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	एतत्, एतद्	एते	एतानि
द्वितीया	एतत्, एतद्	एते	एतानि

शेष रूप पुंलिग के समान चलेंगे।

तद् (वह) पुंल्लिङ्ग

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	सः	तौ	ते
द्वितीया	तम्	तौ	तान्
तृतीया	तेन	ताभ्याम्	तैः
चतुर्थी	तस्मै	ताभ्याम्	तेभ्यः
पञ्चमी	तस्मात्	ताभ्याम्	तेभ्यः
षष्ठी	तस्य	तयोः	तेषाम्
सप्तमी	तस्मिन्	तयोः	तेषु

स्त्रीलिङ्ग

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	सा	ते	ताः
द्वितीया	ताम्	ते	ताः
तृतीया	तया	ताभ्याम्	ताभिः
चतुर्थी	तस्यै	ताभ्याम्	ताभ्यः
पञ्चमी	तस्याः	ताभ्याम्	ताभ्यः
षष्ठी	तस्याः	तयोः	तासाम्
सप्तमी	तस्याम्	तयोः	तासु

नपुंसकलिङ्ग

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	तत्	ते	तानि
द्वितीया	तत्	ते	तानि

शेष रूप पुंलिंग के समान होते हैं।

किम् (कौन) पुंल्लिङ्ग

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	कः	कौ	के
द्वितीया	कम्	कौ	कान्
तृतीया	केन	काभ्याम्	कैः
चतुर्थी	कस्मै	काभ्याम्	केभ्यः
पञ्चमी	कस्मात्	काभ्याम्	केभ्यः
षष्ठी	कस्य	कयोः	केषाम्
सप्तमी	कस्मिन्	कयोः	केषु

स्त्रीलिङ्ग

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	का	के	काः
द्वितीया	काम्	के	काः
तृतीया	कया	काभ्याम्	काभिः
चतुर्थी	कस्यै	काभ्याम्	काभ्यः
पञ्चमी	कस्याः	काभ्याम्	काभ्यः
षष्ठी	कस्याः	कयोः	कासाम्
सप्तमी	कस्याम्	कयोः	कासु

नपुंसकलिङ्ग

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	किम्	के	कानि
द्वितीया	किम्	के	कानि

शेष रूप पुंलिंग के समान होंगे।

अस्मद् (मैं)

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	अहम्	आवाम्	वयम्
द्वितीया	माम् / मा	आवाम् / नौ	अस्मान् / नः
तृतीया	मया	आवाभ्याम्	अस्माभिः
चतुर्थी	मह्यम् / मे	आवाभ्याम् / नौ	अस्मभ्यम् / नः
पञ्चमी	मत्	आवाभ्याम्	अस्मत्
षष्ठी	मम / मे	आवयोः / नौ	अस्माकम् / नः
सप्तमी	मयि	आवयोः	अस्मासु

युष्मद् (तुम)

विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	त्वम्	युवाम्	यूयम्
द्वितीया	त्वाम् / त्वा	युवाम् / वाम्	युष्मान् / वः
तृतीया	त्वया	युवाभ्याम्	युष्माभिः
चतुर्थी	तुभ्यम् / ते	युवाभ्याम् / वाम्	युष्मभ्यम् / वः
पञ्चमी	त्वत्	युवाभ्याम्	युष्मत्
षष्ठी	तव / ते	युवयोः / वाम्	युष्माकम् / वः
सप्तमी	त्वयि	युवयोः	युष्मासु

संस्कृत में संख्यावाची शब्द

51	एकपञ्चाशत्	76	षट्सप्ततिः
52	द्विपञ्चाशत्	77	सप्तसप्ततिः
53	त्रिपञ्चाशत्	78	अष्टसप्ततिः
54	चतुः पञ्चाशत्	79	नवसप्ततिः
55	पञ्चपञ्चाशत्	80	अशीतिः
56	षट्पञ्चाशत्	81	एकाशीतिः
57	सप्तपञ्चाशत्	82	द्वयशीतिः
58	अष्टपञ्चाशत्	83	त्र्यशीतिः
59	नवपञ्चाशत्	84	चतुःअशीतिः
60	षष्टिः	85	पञ्चाशीतिः
61	एकषष्टिः	86	षडशीतिः
62	द्विषष्टिः	87	सप्ताशीतिः
63	त्रिषष्टिः	88	अष्टाशीतिः
64	चतुःषष्टिः	89	नवाशीतिः
65	पञ्चषष्टिः	90	नवतिः
66	षट्षष्टिः	91	एकानवतिः
67	सप्तषष्टिः	92	द्विनवतिः
68	अष्टषष्टिः	93	त्रिनवतिः
69	नवषष्टिः	94	चतुर्नवतिः
70	सप्ततिः	95	पञ्चनवतिः
71	एकसप्ततिः	96	षण्णवतिः, षट्नवतिः
72	द्विसप्ततिः	97	सप्तनवतिः
73	त्रिसप्ततिः	98	अष्टनवतिः
74	चतुःसप्ततिः	99	नवनवतिः
75	पञ्चसप्ततिः	100	शतम्

धातुरूप

भू (होना) धातु (परस्मैपद)

लट् लकार – (वर्तमान काल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुषः	भवति	भवतः	भवन्ति
मध्यम पुरुषः	भवसि	भवथः	भवथ
उत्तम पुरुषः	भवामि	भवावः	भवामः

लृट्लकार – भविष्यत् काल

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुषः	भविष्यति	भविष्यतः	भविष्यन्ति
मध्यम पुरुषः	भविष्यसि	भविष्यथः	भविष्यथ
उत्तम पुरुषः	भविष्यामि	भविष्यावः	भविष्यामः

लोट्लकार – (आज्ञार्थ काल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुषः	भवतु	भवताम्	भवन्तु
मध्यम पुरुषः	भव	भवतम्	भवत
उत्तम पुरुषः	भवानि	भवाव	भवाम

लङ्लकार (भूतकाल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुषः	अभवत्	अभवताम्	अभवन्
मध्यम पुरुषः	अभवः	अभवतम्	अभवत
उत्तम पुरुषः	अभवम्	अभवाव	अभवाम

विधिलिङ्.लकार (विध्यर्थकाल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुषः	भवेत्	भवेताम्	भवेयुः
मध्यम पुरुषः	भवेः	भवेतम्	भवेत
उत्तम पुरुषः	भवेयम्	भवेव	भवेम

पा पिब् (पीना) धातु (परस्मैपद)

लट्लकार (वर्तमान काल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुषः	पिबति	पिबतः	पिबन्ति
मध्यम पुरुषः	पिबसि	पिबथः	पिबथ
उत्तम पुरुषः	पिबामि	पिबावः	पिबामः

लृट्लकार (भविष्यत् काल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुषः	पास्यति	पास्यतः	पास्यन्ति
मध्यम पुरुषः	पास्यसि	पास्यथः	पास्यथ
उत्तम पुरुषः	पास्यामि	पास्यावः	पास्यामः

लोट्लकार (आज्ञार्थकाल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुषः	पिबतु	पिबताम्	पिबन्तु
मध्यम पुरुषः	पिब	पिबतम्	पिबत
उत्तम पुरुषः	पिबानि	पिबावः	पिबाम

लङ्लकार भूतकाल

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुषः	अपिबत्	अपिबताम्	अपिबन्
मध्यम पुरुषः	अपिबः	अपिबतम्	अपिबत
उत्तम पुरुषः	अपिबम्	अपिबाव	अपिबाम

विधिलिङ्.लकार (विध्यर्थकाल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुषः	पिबेत्	पिबेताम्	पिबेयुः
मध्यम पुरुषः	पिबेः	पिबेतम्	पिबेत
उत्तम पुरुषः	पिबेयम्	पिबेव	पिबेम

पच् (पकाना) धातु (परस्मैपद)

लट्लकार (वर्तमान काल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुषः	पचति	पचतः	पचन्ति
मध्यम पुरुषः	पचसि	पचथः	पचथ
उत्तम पुरुषः	पचामि	पचावः	पचामः

लृट्लकार (भविष्यत् काल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुषः	पक्ष्यति	पक्ष्यतः	पक्ष्यन्ति
मध्यम पुरुषः	पक्ष्यसि	पक्ष्यथः	पक्ष्यथ
उत्तम पुरुषः	पक्ष्यामि	पक्ष्यावः	पक्ष्यामः

लोट्लकार (आज्ञार्थकाल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुषः	पचतु	पचताम्	पचन्तु
मध्यम पुरुषः	पच	पचतम्	पचत
उत्तम पुरुषः	पचानि	पचाव	पचाम

लङ्लकार (भूतकाल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुषः	अपचत्	अपचताम्	अपचन्
मध्यम पुरुषः	अपचः	अपचतम्	अपचत
उत्तम पुरुषः	अपचम्	अपचाव	अपचाम

विधिलिङ्.लकार (विध्यर्थकाल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुषः	पचेत्	पचेताम्	पचेयुः
मध्यम पुरुषः	पचेः	पचेतम्	पचेत
उत्तम पुरुषः	पचेयम्	पचेव	पचेम

खेल् (खेलना) धातु (परस्मैपद)

लट्लकार (वर्तमान काल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुषः	खेलति	खेलतः	खेलन्ति
मध्यम पुरुषः	खेलसि	खेलथः	खेलथ
उत्तम पुरुषः	खेलामि	खेलावः	खेलामः

लृट्लकार (भविष्यत् काल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुषः	खेलिष्यति	खेलिष्यतः	खेलिष्यन्ति
मध्यम पुरुषः	खेलिष्यसि	खेलिष्यथः	खेलिष्यथ
उत्तम पुरुषः	खेलिष्यामि	खेलिष्यावः	खेलिष्यामः

लोट्लकार (आज्ञार्थकाल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुषः	खेलतु	खेलताम्	खेलन्तु
मध्यम पुरुषः	खेल	खेलतम्	खेलत
उत्तम पुरुषः	खेलानि	खेलाव	खेलाम

लङ्लकार (भूतकाल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुषः	अखेलत्	अखेलताम्	अखेलन्
मध्यम पुरुषः	अखेलः	अखेलतम्	अखेलत
उत्तम पुरुषः	अखेलम्	अखेलाव	अखेलाम

विधिलिङ्.लकार (विध्यर्थकाल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुषः	खेलेत्	खेलेताम्	खेलेयुः
मध्यम पुरुषः	खेलेः	खेलेतम्	खेलेत
उत्तम पुरुषः	खेलेयम्	खेलेव	खेलेम

लिख् (लिखना) धातु

लट्लकार (वर्तमान काल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुषः	लिखति	लिखतः	लिखन्ति
मध्यम पुरुषः	लिखसि	लिखथः	लिखथ
उत्तम पुरुषः	लिखामि	लिखावः	लिखामः

लृट्लकार (भविष्यत् काल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुषः	लेखिष्यति	लेखिष्यतः	लेखिष्यन्ति
मध्यम पुरुषः	लेखिष्यसि	लेखिष्यथः	लेखिष्यथ
उत्तम पुरुषः	लेखिष्यामि	लेखिष्यावः	लखिष्यामः

लोट्लकार (आज्ञार्थकाल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुषः	लिखतु	लिखताम्	लिखन्तु
मध्यम पुरुषः	लिख	लिखतम्	लिखत
उत्तम पुरुषः	लिखानि	लिखाव	लिखाम

लङ्लकार (भूतकाल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुषः	अलिखत्	अलिखताम्	अलिखन्
मध्यम पुरुषः	अलिखः	अलिखतम्	अलिखत
उत्तम पुरुषः	अलिखम्	अलिखाव	अलिखाम

विधिलिङ्.लकार (विध्यर्थकाल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुषः	लिखेत्	लिखेताम्	लिखेयुः
मध्यम पुरुषः	लिखेः	लिखेतम्	लिखेत
उत्तम पुरुषः	लिखेयम्	लिखेव	लिखेम

स्था (तिष्ठ्) धातु (बैठना, ठहरना)

लट्लकार (वर्तमान काल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुषः	तिष्ठति	तिष्ठतः	तिष्ठन्ति
मध्यम पुरुषः	तिष्ठसि	तिष्ठथः	तिष्ठथ
उत्तम पुरुषः	तिष्ठामि	तिष्ठावः	तिष्ठामः

लृट्लकार (भविष्यत् काल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुषः	स्थास्यति	स्थास्यतः	स्थास्यन्ति
मध्यम पुरुषः	स्थास्यसि	स्थास्यथः	स्थास्यथ
उत्तम पुरुषः	स्थास्यामि	स्थास्यावः	स्थास्यामः

लोट्लकार (आज्ञार्थकाल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुषः	तिष्ठतु,तिष्ठतात्	तिष्ठताम्	तिष्ठन्तु
मध्यम पुरुषः	तिष्ठ, तिष्ठतात्	तिष्ठतम्	तिष्ठत
उत्तम पुरुषः	तिष्ठानि	तिष्ठाव	तिष्ठाम

लङ्लकार (भूतकाल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुषः	अतिष्ठत्	अतिष्ठताम्	अतिष्ठन्
मध्यम पुरुषः	अतिष्ठः	अतिष्ठतम्	अतिष्ठत
उत्तम पुरुषः	अतिष्ठम्	अतिष्ठाव	अतिष्ठाम

विधिलिङ्.लकार (विध्यर्थकाल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुषः	तिष्ठेत्	तिष्ठेताम्	तिष्ठेयुः
मध्यम पुरुषः	तिष्ठेः	तिष्ठेतम्	तिष्ठेत
उत्तम पुरुषः	तिष्ठेयम्	तिष्ठेव	तिष्ठेम

दृश् धातु (देखना)

लट्लकार (वर्तमान काल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुषः	पश्यति	पश्यतः	पश्यन्ति
मध्यम पुरुषः	पश्यसि	पश्यथः	पश्यथ
उत्तम पुरुषः	पश्यामि	पश्यावः	पश्यामः

लृट्लकार (भविष्यत् काल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुषः	द्रक्ष्यति	द्रक्ष्यतः	द्रक्ष्यन्ति
मध्यम पुरुषः	द्रक्ष्यसि	द्रक्ष्यथः	द्रक्ष्यथ
उत्तम पुरुषः	द्रक्ष्यामि	द्रक्ष्यावः	द्रक्ष्यामः

लोट्लकार (आज्ञार्थकाल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुषः	पश्यतु	पश्यताम्	पश्यन्तु
मध्यम पुरुषः	पश्य	पश्यतम्	पश्यत
उत्तम पुरुषः	पश्यानि	पश्याव	पश्याम

लङ्लकार (भूतकाल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुषः	अपश्यत्	अपश्यताम्	अपश्यन्
मध्यम पुरुषः	अपश्यः	अपश्यतम्	अपश्यत
उत्तम पुरुषः	अपश्यम्	अपश्याव	अपश्याम

विधिलिङ्.लकार (विध्यर्थकाल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुष	पश्येत्	पश्येताम्	पश्येयुः
मध्यम पुरुष	पश्येः	पश्येतम्	पश्येत
उत्तम पुरुष	पश्येयम्	पश्येव	पश्येम

अस् धातु (होना)

लट्लकार (वर्तमान काल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुषः	अस्ति	स्तः	सन्ति
मध्यम पुरुषः	असि	स्थः	स्थ
उत्तम पुरुषः	अस्मि	स्वः	स्मः

लृट्लकार (भविष्यत् काल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुषः	भविष्यति	भविष्यतः	भविष्यन्ति
मध्यम पुरुषः	भविष्यसि	भविष्यथः	भविष्यथ
उत्तम पुरुषः	भविष्यामि	भविष्यावः	भविष्यामः

लोट्लकार (आज्ञार्थकाल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुषः	अस्तु	स्ताम्	सन्तु
मध्यम पुरुषः	एधि	स्तम्	स्त
उत्तम पुरुषः	असानि	असाव	असाम

लङ्लकार (भूतकाल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुष	आसीत्	आस्ताम्	आसन्
मध्यम पुरुष	आसीः	आस्तम्	आस्त
उत्तम पुरुष	आसम्	आस्व	आस्म

विधिलिङ्.लकार (विध्यर्थकाल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुष	स्यात्	स्याताम्	स्युः
मध्यम पुरुष	स्याः	स्यातम्	स्यात
उत्तम पुरुष	स्याम्	स्याव	स्याम

लभ् (पाना) धातु (आत्मनेपद)

लट्लकार (वर्तमान काल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुषः	लभते	लभेते	लभन्ते
मध्यम पुरुषः	लभसे	लभेथे	लभध्वे
उत्तम पुरुषः	लभे	लभावहे	लभामहे

लृट्लकार (भविष्यत् काल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुषः	लप्स्यते	लप्स्येते	लप्स्यन्ते
मध्यम पुरुषः	लप्स्यसे	लप्स्येथे	लप्स्यध्वे
उत्तम पुरुषः	लप्स्ये	लप्स्यावहे	लप्स्यामहे

लोट्लकार (आज्ञार्थकाल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुषः	लभताम्	लभेताम्	लभन्ताम्
मध्यम पुरुषः	लभस्व	लभेथाम्	लभध्वम्
उत्तम पुरुषः	लभै	लभावहै	लभामहै

लङ्लकार (भूतकाल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुषः	अलभत	अलभेताम्	अलभन्त
मध्यम पुरुषः	अलभथाः	अलभेथाम्	अलभध्वम्
उत्तम पुरुषः	अलभे	अलभावहि	अलभामहि

विधिलिङ्.लकार (विध्यर्थकाल)

पुरुषः	**एकवचनम्**	**द्विवचनम्**	**बहुवचनम्**
प्रथम पुरुषः	लभेत्	लभेयाताम्	लभेरन्
मध्यम पुरुषः	लभेथाः	लभेयाथाम्	लभेध्वम्
उत्तम पुरुषः	लभेय	लभेवहि	लभेमहि

सेव् धातु (आत्मनेपद)

लट्लकार (वर्तमान काल)

पुरुषः	**एकवचनम्**	**द्विवचनम्**	**बहुवचनम्**
प्रथम पुरुषः	सेवते	सेवेते	सेवन्ते
मध्यम पुरुषः	सेवसे	सेवेथे	सेवध्वे
उत्तम पुरुषः	सेवे	सेवावहे	सेवामहे

लृट्लकार (भविष्यत् काल)

पुरुषः	**एकवचनम्**	**द्विवचनम्**	**बहुवचनम्**
प्रथम पुरुषः	सेविष्यते	सेविष्येते	सेविष्यन्ते
मध्यम पुरुषः	सेविष्यसे	सेविष्येथे	सेविष्यध्वे
उत्तम पुरुषः	सेविष्ये	सेविष्यावहे	सेविष्यामहे

लोट्लकार (आज्ञार्थकाल)

पुरुषः	**एकवचनम्**	**द्विवचनम्**	**बहुवचनम्**
प्रथम पुरुषः	सेवताम्	सेवेताम्	सेवन्ताम्
मध्यम पुरुषः	सेवस्व	सेवेथाम्	सेवध्वम्
उत्तम पुरुषः	सेवै	सेवावहै	सेवामहै

लङ्लकार (भूतकाल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुषः	असेवत	असेवेताम्	असेवन्त
मध्यम पुरुषः	असेवथाः	असेवेथाम्	असेवध्वम्
उत्तम पुरुषः	असेवे	असेवावहि	असेवामहि

विधिलिङ्.लकार (विध्यर्थकाल)

पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथम पुरुषः	सेवेत्	सेवेयाताम्	सेवेरन्
मध्यम पुरुषः	सेवेथाः	सेवेयाथाम्	सेवेध्वम्
उत्तम पुरुषः	सेवेय	सेवेवहि	सेवेमहि

सन्धि प्रकरण

सन्धि का साधारण अर्थ मेल–मिलाप, समझौता, मेल जोल आदि है। व्याकरण में भी सन्धि का यही अर्थ है। व्याकरण में यह समझौता दो वर्णो के मध्य होता है। इसी क्रिया को व्याकरण में सन्धि कहते हैं। इसमें

कभी दो वर्णों के स्थान पर एक नया वर्ण बन जाता है। सुर+इन्द्रः = सुरेन्द्रः। सूर्य+उदयः = सूर्योदयः

कभी पूर्व वर्ण में परिवर्तन हो जाता है – भो+अति = भवति। सु+आगतम् = स्वागतम्

कभी–कभी उत्तर पद का लोप हो जाता है – वने+अस्ति =वनेऽस्ति। प्रभो+अस्तु = प्रभोऽस्तु

कभी पूर्व पद के अन्तिम वर्ण का लोप हो जाता है – प्र+एजते = प्रेजते। उप+ओषति = उपोषति

कभी–कभी दोनों वर्णों के बीच में एक नया वर्ण आ जाता है – तरु + छाया = तरुच्छाया। परि + छेदः = परिच्छेदः

कभी–कभी पूर्व पद के अन्तिम वर्ण को द्वित्व हो जाता है – पठन्+अस्ति = पठन्नति

सन्धि के प्रकार

वर्णों में होने वाली सन्धि तीन प्रकार की होती है।

1. स्वर सन्धि – दो स्वरों के मध्य होने वाली सन्धि को स्वर सन्धि कहते हैं। अर्थात् जब स्वर के साथ स्वर का मेल होता है, तो उसे स्वर संधि कहते हैं।

स्वर संधि के निम्नलिखित भेद होते हैं –

1) दीर्घ

2) गुण

3) वृद्धि

4) यण्

5) अयादि

6) प्रकृतिभाव

7) पूर्वरूप

8) पररूप

दीर्घ सन्धि – यदि ह्रस्व या दीर्घ अ,इ,उ,ऋ में से कोई वर्ण हो और बाद में

यही ह्रस्व या दीर्घ वर्ण हो, तो क्रमशः दीर्घ (आ,ई,ऊ,ॠ) एकादेश होता है।

पहले	बाद में	परिणाम	उदाहरण	
अ या आ	अ या आ	आ (एकादेश)	हिम + आलयः	= हिमालयः
			धन + अर्थी	= धनार्थी
			विद्या + अर्थिनः	= विद्यार्थिनः
			विद्या + आलयः	= विद्यालयः
इ या ई	इ या ई	ई (एकादेश)	रवि + इन्द्रः	= रवीन्द्रः
			कवि + ईश्वरः	= कवीश्वरः
			देवी + इच्छा	= देवीच्छा
			रजनी + ईशः	= रजनीशः

उ या ऊ	उ या ऊ	ऊ (एकादेश)	सु + उक्तिः	= सूक्तिः
			भानु + ऊर्जा	= भानूर्जा
			वधू + उत्सवः	= वधूत्सवः
			भू + ऊर्ध्वम्	= भूर्ध्वम्
ऋ या ॠ	ऋ या ॠ	ॠ एकादेश	पितृ + ऋणम्	= पितॄणम्
			पितृ + ऋद्धिः	= पितॄद्धिः
			मातृ + ऋणम्	= मातॄणम्

गुण सन्धि – प्रथम पद के अन्त में अ या आ हो और द्वितीय पद के प्रारम्भ में इ, या ई हो तो 'ए' उ या ऊ हो तो 'ओ' तथा ऋ या ऋ हो तो 'अर्' गुण एकादेश होता है।

पहले	बाद में	परिणाम	उदाहरण	
अ या आ	इ या ई	ए (एकादेश)	गण + ईशः	= गणेशः
	उ या ऊ	ओ "	रमा + ईशः	= रमेशः
	ऋ या ॠ	अर् "	पर + उपकारः	= परोपकारः
			पुरूष + उत्तमः	= पुरुषोत्तमः
			वर्षा + ऋतुः	= वर्षर्तुः
			ब्रह्मा + ऋषिः	= ब्रह्मर्षिः

वृद्धि सन्धि – पहले अ या आ हो और बाद में ए या ऐ हो तब ऐ एवं ओ या औ हो तब औ, वृद्धि एकादेश होता है । पहले अकारान्त या आकारान्त उपसर्ग के अन्त वाला अ या आ हो और बाद में ऋ हो तब 'आर्' वृद्धि एकादेश होता है –

पहले	बाद में	परिणाम	उदाहरण	
अ या आ	ए या ऐ	ऐ (एकादेश)	अद्य + एव	= अद्यैव
			सा + एव	= सैव
			देश + ऐश्वर्यम्	= देशैश्वर्यम्

अ या आ	ओ या औ	औ (एकादेश)	रूप + ओष्ठः = रूपौष्ठः
			महा + औषधिः = महौषधिः
			विद्या + ओषधिः = विद्यौषधिः
अ या आ	ऋ या ऋ	आर् (एकादेश)	प्र + ऋच्छति = प्रार्च्छति
			उप + ऋच्छन् = उपार्च्छन

यण् सन्धि – पहले इ, ई, उ, ऊ, ऋ या लृ हो और बाद में इनसे भिन्न कोई अन्य स्वर हो तब इ, ई को 'य्', उ, ऊ को 'व्,' ऋ, दीर्घ ॠ को 'र्' तथा लृ को 'ल्' यणादेश होता है।

पहले	बाद में	परिणाम	उदाहरण
इ या ई	कोई अन्य स्वर	य् आदेश	यदि + अपि = यद्यपि
			प्रति + एकम् = प्रत्येकम्
			नदी + अम्बुः = नद्यम्बुः
			इति + उवाच = इत्युवाच
उ या ऊ	कोई अन्य स्वर	व् आदेश	सु + आगतम् = स्वागतम्
			भू + आदि = भ्वादि
			गुरु + आदेशः = गुर्वादेशः
			सु + आहा = स्वाहा
ऋ या ॠ	कोई अन्य स्वर	र् आदेशः	पितृ + उपदेशः = पित्रुपदेशः
			मातृ + अधिकारः = मात्राधिकारः
			पितृ + आदेशः = पित्रादेशः
लृ	कोई अन्य स्वर	ल् आदेश	लृ + आकृतिः = लाकृतिः

अयादि सन्धि – पहले ए, ओ, ऐ अथवा औ हो तथा बाद में कोई भी स्वर हो तो ए को अय्, ओ को अव् ऐ को आय, तथा औ को आव् अयादेश होता है।

पहले	बाद में	परिणाम	उदाहरण
ए	कोई स्वर	अय् आदेश	कवे + ए = कवये
			ने + अनम् = नयनम्

ओ	कोई स्वर	अव् आदेश	पो + अनम्	=	पवनम्
			भो + अति	=	भवति
ऐ	कोई स्वर	आय् आदेश	नै + अकः	=	नायकः
			गै + अकः	=	गायकः
औ	कोई स्वर	आव् आदेश	भौ + उकः	=	भावुकः
			पौ + अनः	=	पावनः

पूर्वरूप स्वर सन्धि – यदि पदान्त में ए, ओ, हो और बाद में 'अ' हो तो 'अ' को पूर्वरूप (ऽ) हो जाता है। 'अ' को सन्धि करते समय ए, ओ के साथ मिलाकर 'अ' को अवग्रह्र (ऽ) पूर्वरूप चिह्न लगा दिया जाता है।

पहले	बाद में	परिणाम	उदाहरण		
ए	अ	ए ऽ एकादेश	वने + अत्र	=	वनेऽत्र
			ग्रामे + अपि	=	ग्रामेऽपि
ओ	अ	ओ ऽ एकादेश	बालो +अस्ति	=	बालोऽस्ति
			रामो + अवदत्	=	रामोऽवदत्
			को + अपि	=	कोऽपि

पररूप संधि – 'अ' से अंत होने वाले उपसर्ग के बाद 'ए' या 'ओ' से प्रारंभ होने वाले धातु हो तो दोनों के स्थान पर पररूप (अर्थात् ए या ओ) एकादेश हो जाता है।

प्र + एजते	=	प्रेजते	(अ+ए = ए)
उप + ओषति	=	उपोषति	(अ+ओ = ओ)

विशेष – शकन्धु आदि शब्दों में टि अर्थात् अन्तिम स्वर सहित अगला अंश को पररूप हो जाता है।

शक + अन्धुः	=	शकन्धुः
मनस् + ईषा	=	मनीषा
पतत् + अञ्जलिः	=	पतञ्जलिः
कुल + अटा	=	कुलटा
मार्त + अण्डः	=	मार्तण्डः

प्रकृतिभाव संधि – किसी शब्द के द्विवचन के रूप के अन्त में ई, ऊ तथा ए के आगे किसी स्वर के आने पर कोई भी सन्धि नहीं होती है।

हरी + एतौ = हरी एतौ

विष्णू + इमौ = विष्णू इमौ

गंगे + अमू = गंगे अमू

व्यञ्जन सन्धि – जब व्यञ्जन के साथ स्वर या व्यञ्जन का मेल हो, तो उसे व्यञ्जन सन्धि कहते हैं।

(1) अच् + अन्तः = अजन्तः

(2) सत् + जनः = सज्जनः

(3) सत् + आचारः = सदाचारः

(4) उत् + डीनः = उड्डीनः

विसर्ग–सन्धि – जब विसर्ग के साथ स्वर या व्यञ्जन का मेल हो, तो उसे विसर्ग सन्धि कहते हैं।

कविः + अयम् = कविरयम्

सः + अपि = सोऽपि

भानुः + उदितः = भानुरुदितः

निः + मलम् = निर्मलम्

निः + रोगः = नीरोगः

समास प्रकरण

समास का अर्थ है संक्षेप। अथवा –''समसनम् अनेकेषां पदानाम् एकपदीभवनम् इति समासः।'' जब दो या दो से अधिक पदों को मिलाकर एक पद बना दिया जाता है तब उसे 'समास' कहते हैं और उसे 'समस्त–पद' या 'सामासिक पद' कहते हैं। समस्त पद को अलग करना 'समास–विग्रह' कहलाता है।

जब एक ये अधिक पदों को मिलाया जाता है तब पदों के बीच की विभक्ति (कारक) नहीं रहती। विभक्ति, पदों को मिलाने के पश्चात् अंत में लगाई जाती है। जैसे :– रामः च लक्ष्मणः च इन दो पदों का समास करने पर ''रामलक्ष्मणौ'' पद में राम और लक्ष्मण इन दो शब्दों को मिलाने के बाद द्विवचन की विभक्ति लगाकर ''रामलक्ष्मणौ'' पद बनता है।

समास के छः भेद हैं – अव्ययीभाव समास, तत्पुरुष समास, द्वन्द समास, बहुब्रीहि समास, द्विगु समास, कर्मधारय समास।

अव्ययीभाव समास – जिस समास में पहला पद प्रधान और प्रायः अव्यय होता है उसे 'अव्ययीभाव' समास कहते हैं।

समास विग्रह	सामासिक पद
बलम् अनतिक्रम्य	यथाबलम्
रूपस्य योग्यम्	अनुरूपम्
गृहम्–गृहम्	प्रतिगृहम्
आ मरणात्	आमरणम्
अक्ष्णः प्रति	प्रत्यक्षम्
जनानाम् अभावः	निर्जनम्
कृष्णस्य समीपम्	उपकृष्णम्

तत्पुरुष समास – जिस समास में दूसरा पद प्रधान होता है उसे 'तत्पुरुष' समास कहते हैं। तत्पुरुष समास में पूर्व पद द्वितीया से सप्तमी तक किसी भी विभक्ति का हो सकता है। इस आधार पर इसके छः भेद होते हैं –

	भेद	समास विग्रह	सामासिक पद
1	द्वितीया तत्पुरुष	ग्रामं गतः	ग्रामगतः
		जीवनं प्राप्तः	जीवनप्राप्तः
		सुखम् आपन्नः	सुखापन्नः
2	तृतीया तत्पुरुष	विद्यया हीनः	विद्याहीनः
		ज्ञानेन शून्यः	ज्ञानशून्यः
		हरिणा त्रातः	हरित्रातः
		धनेन हीनः	धनहीनः
		पित्रा तुल्यः	पितृतुल्यः
3	चतुर्थी तत्पुरुषः	पाठाय शाला	पाठशाला
		विप्राय दानम्	विप्रदानम्
		अश्वाय तृणम्	अश्वतृणम्

4	पञ्चमी विभक्तिः	व्याघ्रात् भयम्	व्याघ्रभयम्
		रोगात् मुक्तः	रोगमुक्तः
		धर्मात् भ्रष्टः	धर्मभ्रष्टः
		पापात् मुक्तः	पापमुक्तः
5	षष्ठी तत्पुरुषः	राज्ञः पुरुषः	राजपुरुषः
		परेषाम् उपकारः	परोपकारः
		विद्यायाः आलयः	विद्यालयः
		विष्णोः भक्तः	विष्णुभक्तः
6	सप्तमी तत्पुरुषः	वाचि पटुः	वाक्पटुः
		शास्त्रेषु निपुणः	शास्त्रनिपुणः
		व्यवहारे कुशलः	व्यवहारकुशलः
		काव्ये प्रवीणः	काव्यप्रवीणः

नञ् तत्पुरुष समास – तत्पुरुष समास का एक भेद 'नञ्' समास है। 'नहीं' अर्थ वाले 'नञ्' का जब दूसरे शब्द के साथ समास होता है तो उसे 'नञ्' समास कहते हैं। 'नञ्' के बाद व्यञ्जन हो, तो 'नञ्' का 'अ' शेष रहता है और बाद में स्वर होने पर 'नञ्' का अन् हो जाता है।

समास विग्रह	सामासिक पद
न ब्राह्मणः	अब्राह्मणः
न प्रियः	अप्रियः
न उपस्थितः	अनुपस्थितः
न उदारः	अनुदारः
न आवश्यकः	अनावश्यकः

द्वन्द्व समास – जिस समास में दोनों पद अथवा सभी पदों की प्रधानता होती है, उसे 'द्वन्द्व' समास कहते हैं। इसका अर्थ करने पर पदों के बीच में 'और' अर्थ निकलता है। कुछ जगह द्वन्द्व समास होने पर समूह का भी अर्थ होता है और पूरा पद एकवचनान्त हो जाता है।

समास विग्रह	सामासिक पद
सीता च रामः च	सीतारामौ
पत्रं च पुष्पं च फलं च	पत्रपुष्पफलानि
माता च पिता च	पितरौ
पाणी च पादौ च	पाणिपादम्
मुखं च नासिका च अनयोः समाहारः	मुखनासिकम्

बहुब्रीहि समास – जिस समास में अन्य पद की प्रधानता होती है, उसे 'बहुब्रीहि समास' कहते हैं। बहुब्रीहि समास में समस्त पद किसी अन्य (विशेष्य) पद के विशेषण बन जाते हैं।

समास–विग्रह	सामासिक–पद
शुक्लम् अम्बरं यस्याः सा	शुक्लाम्बरा (सरस्वती)
लम्बम् उदरं यस्य सः	लम्बोदरः (गणेशः)
पीतम् अम्बरं यस्य सः	पीताम्बरः (विष्णुः)
चत्वारि आननानि यस्य सः	चतुराननः (ब्रह्मा)
चन्द्रः शेखरे यस्य सः	चन्द्रशेखरः (शंकरः)
यशः एव धनं यस्य सः	यशोधनः (राजा)
गदा हस्ते यस्य सः	गदाहस्तः
वीणा पाणौ यस्याः सा	वीणापाणिः (सरस्वती)
पतितं पर्णं यस्मात् सः	पतितपर्णः (वृक्षः)

द्विगु समास – जिस समास में पहला पद संख्यावाची होता है उसे द्विगु समास कहते हैं। यह समास प्रायः समाहार (समूह) अर्थ में होता है।

समास–विग्रह	सामासिक–पद
त्रयाणां फलानां समाहारः	त्रिफला
चतुर्णां युगानां समाहारः	चतुर्युगम्
पञ्चानां पात्राणां समाहारः	पञ्चपात्रम्
सप्तानाम् अह्नां समाहारः	सप्ताहः

कर्मधारय–समास – जिस समास में विशेष्य–विशेषण भाव होता है उसे कर्मधारय समास कहते हैं। इसमें दोनों पदो के लिंग, वचन, विभक्ति समान होते हैं।

समास विग्रह	सामासिक पद
नीलं कमलम्	नीलकमलम्
कृष्णः सर्पः	कृष्णसर्पः
पीतम् अम्बरम्	पीताम्बरम्
घन इव श्यामः	घनश्यामः
महान् चासौ देवः	महादेवः
महान् चासौ कविः	महाकविः
दीर्घा च सा नदी	दीर्घनदी
जीर्णम् च तत् उद्यानम्	जीर्णोद्यानम

अव्यय

जो शब्द तीनों लिङ्गों, सभी कारकों और सभी वचनों में एक समान रहते हैं, वे अव्यय कहलाते हैं। अव्यय शब्द 'अविकारी' होते हैं। अव्यय शब्दों का रूप परिवर्तन नहीं होता है। वे प्रत्येक स्थिति में एक समान रहते हैं। जैसे– कुत्र (कहाँ), सर्वत्र (सभी जगह), अद्य (आज), यथा (जैसे), अपि (भी) धिक् आदि।

अव्ययों के पाँच प्रकार प्रमुख हैं :–

क्रिया विशेषण अव्यय	–	यदा, तदा, कदा, एकदा आदि।
संयोजक या समुच्चय बोधक अव्यय	–	एवम्, च, परन्तु अथवा।
सम्बन्ध बोधक अव्यय	–	यावत् (जब तक), तावत् (तब तक) बिना, अन्तरा आदि।
विस्मयादिबोधक अव्यय	–	अहो, धिक्, भो आदि।
निषेधवाचक अव्यय	–	न, नो, नहि, मा, अलम् आदि।

अव्ययों का संस्कृत वाक्यों में प्रयोग

अद्य	=	आज	–	अद्य भवान् कुत्र गमिष्यति ?
इव	=	समान	–	मूर्खः अपि पण्डितः इव वदति।
कुतः	=	किधर, कहाँ से	–	कुतः भवान् आगतः ?
च	=	और	–	अहं संस्कृतं गणितं च साधु जानामि।
यत्र	=	जहाँ	–	यत्र धूमः तत्र अग्निः।
नक्तम्	=	रात्रि	–	अहं नक्तन्दिवं पठामि।
शनैः	=	धीरे	–	कथं त्वं शनैः वदसि ?
ह्यः	=	बीता हुआ कल	–	स ह्यः गृहं गतः।
साम्प्रतम्	=	अब	–	साम्प्रतम् अवकाशः समयः अस्ति।
मा	=	मत	–	कोलाहलं मा् कुरु।
मृषा	=	झूठ	–	मृषा मा वद।
उभयतः	=	दोनों ओर	–	ग्रामं उभयतः वनम् अस्ति।
श्वः	=	आने वाला कल	–	अहं श्वः नगरं गमिष्यामि।
सायम्	=	शाम	–	सः सायम् आगतः।
एव	=	ही	–	वयं संस्कृतम् एव वदामः।
नूनम्	=	निश्चय	–	मानवः निजकर्मणः फलं नूनम् आप्नोति।
वृथा	=	व्यर्थ, बेकार	–	सत्येन बिना वचनं वृथा अस्ति।
एवम्	=	इस प्रकार	–	एवम् अकथयत् सः।
एकदा	=	एक बार	–	एकदा अहं नगरम् अगच्छम्।
कदा	=	कब	–	त्वं कदा आगतः ?
कुत्र	=	कहाँ	–	त्वं कुत्र गच्छसि ?
सर्वत्र	=	सभी जगह	–	अति सर्वत्र वर्जयेत्।

ऋते	=	बिना	–	परिश्रमात् ऋते न साफल्यम्।
परह्य	=	बीता हुआ परसों	–	अहं परह्य ग्रामम् अगच्छम्।
परश्वः	=	आने वाला परसों	–	अहं परश्वः पुस्तकं दास्यामि।
न	=	नहीं	–	असत्यं न वदेत्।
अधुना	=	इस समय	–	अधुना अहं क्रीडामि।
अन्तः	=	अन्दर	–	गृहम् अन्तः कलहं नोचितम्।
बहिः	=	बाहर	–	छात्राः कक्षायाः बहिः गच्छन्ति।
सर्वथा	=	सब प्रकार से	–	सः सर्वथा साधुः अस्ति।
ननु	=	अवश्य	–	ननु वयं रामायणं पठिष्यामः।
भूयः	=	बार–बार	–	भूयोऽपि नमो नमस्ते।
एकत्र	=	एक जगह	–	सर्वे छात्राः एकत्र भवन्तु।
अन्यत्र	=	दूसरी जगह	–	त्वम् अन्यत्र गच्छ।
ईषत्	=	थोड़ा	–	ईषत् दुग्धं देहि।
मुहुः	=	बार–बार	–	मुहुः विचिन्त्य वदेत्।
इत्थम्	=	ऐसा इस प्रकार	–	इत्थं कदा भविष्यति ?
निकषा	=	निकट	–	ग्रामं निकषा एकः सरोवरः अस्ति।
चेत्	=	यदि	–	पठिष्यसि चेत् तदैव सफलः भविष्यसि।
सकृत	=	एक बार	–	सिंही सकृत प्रसूते।
आम्	=	ठीक , हाँ	–	आम् अहं गमिष्यामि।
पुरा	=	पहले, पुराने समय में	–	पुरा सर्वत्र धर्मः आसीत्।
पश्चात्	=	पीछे	–	रामात् पश्चात् सीता आगच्छति।
पुरः	=	आगे	–	पुरः गच्छन् सः सर्पम् अपश्यत्।

उपसर्ग

सामान्यतया जो धातुओं के समीप रखे जाते हैं, वे उपसर्ग कहलाते हैं। उपसर्ग धातु के पूर्व जोड़े जाते हैं तथा उसके अर्थ को विशेषता प्रदान करते हैं। धातुओं के अलावा अन्य शब्दों में भी उपसर्ग जोड़े जाते हैं। जैसे :–

अधि + कृ (धातु) = अधिकरोति

अधि + पति (संज्ञा) = अधिपति

संस्कृत में उपसर्गों की संख्या 22 है । ये हैं – प्र, परा, अप, सम्, अनु, अव, निस्, निर्, दुस्, दुर्, वि, आङ्. , नि, अधि, अपि, अति, सु, उत्, अभि, प्रति, परि, उप।

उपसर्गयुक्त क्रियाओं के कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं –

उपसर्ग	**क्रियापद**	**बने शब्द**	**अर्थ**
प्र	सरति	प्रसरति	फैलता है
	नयति	प्रणयति	रचना करता है
	वसति	प्रवसति	विदेश में रहता है
परा	वसति	परावसति	दूर रहता है
	जयति	पराजयते	हारता है
अप	हरति	अपहति	चुराता है
	नयति	अपवदति	निन्दा करता है
	वदति	अपनयति	हटाता है
सम्	गच्छति	संगच्छते	मिलता है
	शेते	संशेते	संदेह करता है
अनु	वदति	अनुवदति	अनुवाद करता है
	गच्छति	अनुगच्छति	अनुगमन करता है
	वर्तते	अनुवर्तते	अनुसरण करता है
अव	रोहति	अवरोहति	उतरता है
	जानाति	अवजानाति	अपमान करता है
निस्	दिशति	निर्दिशति	बतलाता है

निर्	नयति	निर्णयति	निर्णय करता है
	गच्छति	निर्गच्छति	निकालता है
	ईक्षते	निरीक्षते	निगरानी करता है
दुस्	चरति	दुश्चरति	दुराचार करता है
दुर्	गच्छति	दुर्गच्छति	दुःख भोगता है
वि	तरति	वितरति	बाँटता है
	चरति	विचरति	टहलता है
आ	नयति	आनयति	लाता है
	गच्छति	आगच्छति	आता है
नि	गृह्णानि	निगृह्णति	निगलता है
	सीदति	निषीदति	बैठता है
अधि	वसति	अधिवसति	निवास करता है
अपि	धत्ते	अपिधत्ते	ढाँकता है
	गिरति	अपिगिरति	स्तुति करता है
अति	रिच्यते	अतिरिच्यते	बढ़ता है
सु	करोति	सुकरोति	अच्छा काम करता है
	चरति	सुचरति	अच्छा आचरण करता है
उत्	हरति	उद्धरति	उद्धार करता है
	नयति	उन्नयति	उन्नति करता है
अभि	जानाति	अभिजानाति	पहचानता है
प्रति	वदति	प्रतिवदति	जवाब देता है
	ईक्षते	प्रतीक्षते	प्रतीक्षा करता है
परि	नयति	परिणयति	विवाह करता है
उप	वदति	उपवदति	खुशामद करता है
	वसति	उपवसति	उपवास करता है

प्रत्यय

संस्कृत में सार्थक शब्दों को 'पद' कहते हैं। किसी 'पद' की 'व्युत्पत्ति' का अर्थ है – उस पद विशेष का रूप निर्माण किस प्रकार हुआ अर्थात् किस प्रकृति और प्रत्यय के मेल से हुआ, यह बताना। किसी शब्द के मूल रूप को 'प्रकृति' कहते हैं। उसमें बाद में लगने वाले शब्दांश को 'प्रत्यय' कहते हैं।

यहाँ यह याद रखना जरूरी है कि संस्कृत में संज्ञा, सर्वनाम और विशेषण को नामपद कहते हैं। धातु, प्रत्यय और प्रत्ययान्त के अतिरिक्त जो शब्द अर्थयुक्त हो उसे प्रातिपदिक कहते हैं। कृदन्त, तद्धितान्त और समास भी प्रातिपदिक कहलाते हैं। जिस प्रातिपदिक के अंत में सुप् विभक्ति हो और जिस धातु के अंत में तिङ् विभक्ति हो उसे पद कहते हैं। सुप् और तिङ् को विभक्ति कहते हैं, हालाँकि वे एक तरह के प्रत्यय ही हैं।

सुप् नाम पदों के कारक विभक्ति और वचन को बताते हैं। यथा राम+सु = रामः

तिङ् धातु पदों के काल, पुरुष और वचन को बताते हैं। यथा भू + तिप् = भवति

मुख्य रूप से प्रत्यय दो प्रकार के हैं – कृत प्रत्यय और तद्धित प्रत्यय ।

स्त्री प्रत्यय – जो नाम पदों का स्त्री वाची रूप बताते हैं। यथा – छात्र+टाप् = छात्रा

कृत् प्रत्यय

ये प्रत्यय धातु के अंत में लगते हैं और इनसे बने शब्द संज्ञा, विशेषण और अव्यय होते हैं। कृत् प्रत्यय जिन शब्दों के अन्त में लगे रहते हैं उन्हें 'कृदन्त' शब्द कहते हैं। इसके अंतर्गत आनेवाले मुख्य प्रत्यय हैं –

क्त्वा प्रत्यय

पहले होने वाली क्रिया को सूचित करने के लिए धातु में 'क्त्वा' प्रत्यय लगाया जाता है। 'क्त्वा' प्रत्यय का अर्थ 'करके' होता है। क्त्वा का क् वर्ण का लोप होता है। शेष 'त्वा' धातु के पश्चात् जुड़ता है। कुछ जगह 'त्वा' के पहले धातु में 'इ' भी जुड़ता है। जैसे – पठ्+क्त्वा = पठित्वा

क्त्वा प्रत्ययान्त शब्द

मूलधातु	**प्रत्यय**	**कृदन्त**	**अर्थ**
हस्	क्त्वा	हसित्वा	हँसकर
वद्	क्त्वा	उदित्वा	बोलकर
ग्रह्	क्त्वा	गृहीत्वा	लेकर
प्रच्छ्	क्त्वा	पृष्ट्वा	पूछकर
भू	क्त्वा	भूत्वा	होकर
कृ	क्त्वा	कृत्वा	करके
दृश्	क्त्वा	दृष्ट्वा	देखकर
लिख्	क्त्वा	लिखित्वा	लिखकर

ल्यप् प्रत्यय

ल्यप् प्रत्यय का प्रयोग तब होता है जब धातु के पूर्व उपसर्ग का प्रयोग होता है। तब 'क्त्वा' की जगह ल्यप् लगता है। ल्यप् प्रत्यय के 'ल्' एवं 'प्' वर्णों का लोप होता है केवल 'य' वर्ण शेष रहता है और धातु के पश्चात् जुड़ जाता है। इनसे बनने वाले शब्द अव्यय होते हैं।

ल्यप् प्रत्ययान्त शब्द

उपसर्ग	धातु	प्रत्यय	कृदन्त	अर्थ
अनु	भू	ल्यप्	अनुभूय	अनुभव कर
आ	दा	ल्यप्	आदाय	लेकर
उत्	पत्	ल्यप्	उत्पत्य	उड़कर
प्र	स्था	ल्यप्	प्रस्थाय	चलकर
आ	गम्	ल्यप्	आगत्य	आकर
प्र	नम्	ल्यप्	प्रणम्य	प्रणाम कर
सम्	पठ्	ल्यप्	संपठ्य	पढकर
सम्	श्रु	ल्यप्	संश्रुत्य	सुनकर
नि	पा	ल्यप्	निपीय	पीकर
वि	हस्	ल्यप्	विहस्य	हँसकर
वि	हा	ल्यप्	विहाय	छोड़कर
आ	नी	ल्यप्	आनीय	लाकर
परि	ईक्ष्	ल्यप्	परीक्ष्य	परीक्षा लेकर
उत्	लिख्	ल्यप्	उल्लिख्य	ऊपर लिखकर
वि	क्री	ल्यप्	विक्रीय	बेचकर
आ	हन्	ल्यप्	आहत्य	घायल कर
सम्	पूज्	ल्यप्	सम्पूज्य	पूजा कर
प्र	दा	ल्यप्	प्रदाय	देकर
अधि	इ	ल्यप्	अधीत्य	पढ़कर

शतृ प्रत्यय

किसी क्रिया के वर्तमानकाल में होते रहने के अर्थ में धातु के साथ शतृ प्रत्यय लगता है। शतृ का प्रयोग सिर्फ परस्मैपद धातुओं के साथ होता है। शतृ में 'अत्' शेष रहता है। इसका लिङ्ग के अनुसार रूप बदलता है।

शतृ प्रत्ययान्त शब्द (परस्मैपद)

मूलधातु	प्रत्यय	पुंलिंग	स्त्रीलिंग	नपुंसकलिंग	अर्थ
गम्	शतृ	गच्छन्	गच्छन्ती	गच्छत्	जाता हुआ
लिख्	शतृ	लिखन्	लिखन्ती	लिखत्	लिखता हुआ
धाव्	शतृ	धावन्	धावन्ती	धावत्	दौड़ता हुआ
स्था	शतृ	तिष्ठन्	तिष्ठन्ती	तिष्ठत्	ठहरता हुआ
नृत्	शतृ	नृत्यन्	नृत्यन्ती	नृत्यत्	नाचता हुआ
श्रु	शतृ	श्रृण्वन्	श्रृण्वन्ती	श्रृण्वत्	सुनता हुआ
कृ	शतृ	कुर्वन्	कुर्वती	कुर्वत्	करता हुआ
नम्	शतृ	नमन्	नमन्ती	नमत्	नमस्कार करता हुआ
स्मृ	शतृ	स्मरन्	स्मरन्ती	स्मरत्	याद करता हुआ
इष्	शतृ	इच्छन्	इच्छन्ती	इच्छत्	चाहता हुआ
अस्	शतृ	सन्	सती	सत्	होता हुआ
दा	शतृ	ददत्	ददती	ददत्	देता हुआ
कथ्	शतृ	कथयन्	कथयन्ती	कथयत्	करता हुआ
पठ्	शतृ	पठन्	पठन्ती	पठत्	पढ़ता हुआ
दृश	शतृ	पश्यन्	पश्यन्ती	पश्यत्	देखता हुआ
घ्रा	शतृ	जिघ्रन्	जिघ्रन्ती	जिघ्रत्	सूँघता हुआ
जि	शतृ	जयन्	जयन्ती	जयत्	जीतता हुआ

शानच् प्रत्यय

शानच् प्रत्यय में 'श्' और 'च्' का लोप हो जाता है। 'आन' बचता है। इसके पूर्व में अकार रहने पर 'मुक्' (म्) का आगम हो जाता है और उससे मिलने पर 'मान' रूप सामने आता है। इसका भी लिंग के अनुसार रूप बदलता है।

शानच् प्रत्ययान्त शब्द (आत्मनेपद)

मूलधातु	प्रत्यय	पुंलिंग	स्त्रीलिंग	नपुंसकलिंग	अर्थ
वृत्	शानच्	वर्तमानः	वर्तमाना	वर्तमानम्	होता हुआ
लभ्	शानच्	लभमानः	लभमाना	लभमानम्	प्राप्त करता हुआ
सेव्	शानच्	सेवमानः	सेवमाना	सेवमानम्	सेवा करता हुआ
वन्द्	शानच्	वन्दमानः	वन्दमाना	वन्दमानम्	वंदना करता हुआ
विद्	शानच्	विद्यमानः	विद्यमाना	विद्यमानम्	होता हुआ
वृध्	शानच्	वर्धमानः	वर्धमाना	वर्धमानम्	बढ़ता हुआ
मन्	शानच्	मन्यमानः	मन्यमाना	मन्यमानम्	मानता हुआ
कृ	शानच्	कुर्वाणः	कुर्वाणा	कुर्वाणम्	करता हुआ
आस्	शानच्	आसीनः	आसीना	आसीनम्	बैठता हुआ
शीङ्.	शानच्	शयानः	शयाना	शयानम्	सोता हुआ

क्त, क्तवतु

भूतकालिक क्रियापदों के निर्माण के लिए धातु (क्रिया) के साथ 'क्त' अथवा 'क्तवतु' प्रत्यय लगाए जाते हैं। इसमें 'क्त' प्रत्यय के योग से बने पदों का प्रयोग कर्मवाच्य या भाववाच्य में होता हैऔर 'क्तवतु' प्रत्यय के योग से बने क्रिया पदों का प्रयोग केवल कर्तृवाच्य में किया जाता है।

क्त प्रत्यय

मूलधातु	प्रत्यय	पुल्लिङ्.ग	स्त्रीलिङ्.ग	नपुंसकलिङ्.ग	अर्थ
(परस्मैपद)					
पठ्	क्त	पठितः	पठिता	पठितम्	पढ़ा गया
हस्	क्त	हसितः	हसिता	हसितम्	हँसा गया
प्रच्छ्	क्त	पृष्टः	पृष्टा	पृष्टम्	पूछा गया
दृश्	क्त	दृष्टः	दृष्टा	दृष्टम्	देखा गया
ब्रू/वच्	क्त	उक्तः	उक्ता	उक्तम्	कहा गया
प	क्त	पीतः	पीता	पीतम्	पिया गया
कृ	क्त	कृतः	कृता	कृतम्	किया गया
श्रु	क्त	श्रुतः	श्रुता	श्रुतम्	सुना गया
खाद्	क्त	खादितः	खादिता	खादितम्	खाया गया

क्तवतु प्रत्यय

मूलधातु	प्रत्यय	पुल्लिङ्.ग	स्त्रीलिङ्.ग	नपुंसकलिङ्.ग	अर्थ
(परस्मैपद)					
कृ	क्तवतु	कृतवान्	कृतवती	कृतवत्	कर चुका
दा	क्तवतु	दत्तवान्	दत्तवती	दत्तवत्	दे चुका
दृश	क्तवतु	दृष्टवान्	दृष्टवती	दृष्टवत्	देख चुका
नम्	क्तवतु	नतवान्	नतवती	नतवत्	नमस्कार कर चुका
पा	क्तवतु	पीतवान्	पीतवती	पीतवत्	पी चुका
गम्	क्तवतु	गतवान्	गतवती	गतवत्	जा चुका
क्री	क्तवतु	क्रीतवान्	क्रीतवती	क्रीतवत्	खरीद चुका
ब्रू/वच्	क्तवतु	उक्तवान्	उक्तवती	उक्तवत्	कह चुका
श्रु	क्तवतु	श्रुतवान्	श्रुतवती	श्रुतवत्	सुन चुका

तुमुन् प्रत्यय – 'के लिए' इस अर्थ में धातु के साथ तुमुन प्रत्यय लगता है। इसमें 'तुम' शेष रहता है। इस प्रत्यय से बनने वाले शब्द अव्यय होते हैं।

मूलशब्द	प्रत्यय	कृदन्त	अर्थ
लिख्	तुमुन्	लेखितुम्	लिखने के लिए
स्मृ	तुमुन्	स्मर्तुम्	याद करने के लिए
दा	तुमुन्	दातुम्	देने के लिए
नी	तुमुन्	नेतुम्	ले जाने के लिए
पा	तुमुन्	पातुम्	पीने के लिए
श्रु	तुमुन्	श्रोतुम्	सुनने के लिए
दृश्	तुमुन्	द्रष्टुम्	देखने के लिए
अधि–इ	तुमुन्	अध्येतुम्	अध्ययन करने के लिए
क्री	तुमुन्	क्रेतुम्	खरीदने के लिए

तव्यत् और अनीयर्

तव्यत् और अनीय्र प्रत्यय का प्रयोग 'चाहिए' अथवा 'योग्य' अर्थ में होता है। इनसे बने क्रिया पदों का प्रयोग केवल कर्मवाच्य में होता है। तव्यत् में 'तव्य' शेष रहता है जबकि 'अनीयर् में 'अनीय' शेष रहता है।

धातु	**प्रत्यय**	**कृदन्त**	**अर्थ**
दृश्	तव्यत्	द्रष्टव्यः	देखना चाहिए
प्रच्छ्	तव्यत्	प्रष्टव्यः	पूछना चाहिए
दा	तव्यत्	दातव्यः	देना चाहिए
श्रु	तव्यत्	श्रोतव्यः	सुनना चाहिए
ग्रह	तव्यत्	ग्रहीतव्यः	ग्रहण करना चाहिए
ज्ञा	तव्यत्	ज्ञातव्यः	जानना चाहिए
कृ	तव्यत्	कर्तव्यः	करना चाहिए
पा	तव्यत्	पातव्यः	पीना चाहिए
भू	तव्यत्	भवितव्यः	होना चाहिए

अनीयर् प्रत्ययान्त शब्द

धातु	प्रत्यय	कृदन्त शब्द	अर्थ
कृ	अनीयर्	करणीयः	करना चाहिए
स्मृ	अनीयर्	स्मरणीयः	स्मरण करना चाहिए
दृश्	अनीयर्	दर्शनीयः	देखना चाहिए
पा	अनीयर्	पानीयम्	पीना चाहिए
भू	अनीयर्	भवनीयः	होना चाहिए
स्था	अनीयर्	स्थानीयः	ठहरना चाहिए
धाव्	अनीयर्	धावनीयः	दौड़ना चाहिए
दा	अनीयर्	दानीयः	देना चाहिए
श्रु	अनीयर्	श्रवणीयः	सुनना चाहिए

तद्धित प्रत्यय

तद्धित प्रत्यय संज्ञा, सर्वनाम और विशेषण में लगते हैं। धातुओं को छोड़कर शेष सभी प्रकार के शब्दों से जिन प्रत्ययों को लगाकर कुछ विशेष अर्थ निकाला जाता है, उसे तद्धित प्रत्यय कहते हैं। तद्धति प्रत्यय से बने शब्द तद्धितान्त कहलाते हैं।

अण् प्रत्यय – तद्धित प्रत्ययों में अण् प्रत्यय प्रमुख है। इसका प्रयोग कई अर्थों में होता है, यथा :– भाववाचक संज्ञा पद बनाने में, अपत्य (संतान) वाची शब्द में, देवतावाची शब्द में, पढ़ने के अर्थ में, जानने के अर्थ में, समूह के अर्थ में आदि। अण् में ण् का लोप हो जाता है। जैसे –

मनु + अण्	–	मानवः (मनु की संतान)
रघु + अण्	–	राघवः (रघु की संतान)
पाण्डु + अण्	–	पाण्डवः (पाण्डु का पुत्र)
शिव + अण्	–	शैवः (शिव देवता वाला)
व्याकरण + अण्	–	वैयाकरणः (व्याकरण को पढ़ने या जानने वाला)
कपोत + अण्	–	कापोतम् (कबूतरों का झुंड)
बक + अण्	–	बाकम् (बगुलों का झुंड)

मतुप् (मत्, वत्) प्रत्यय

वह इसमें है या वह इसका है इस अर्थ में मतुप् का प्रयोग होता है। मतुप् के पहले 'अ' स्वर रहने पर 'म' का 'व' हो जाता है। शब्द में केवल 'मान' जुड़ता है। जैसे –

अंशु + मतुप्	–	अंशुमान् (किरणों वाला)
बुद्धि + मतुप्	–	बुद्धिमान् (बुद्धिवाला)
बल + मतुप्	–	बलवान् (बलवाला)
गुण + मतुप्	–	गुणवान् (गुणवाला)
धन + मतुप्	–	धनवान् (धनवाला)

इनि प्रत्यय

वह इसमें है या वह इसका है इस अर्थ में 'इनि' प्रत्यय का प्रयोग होता है। शब्द में जोड़ते समय केवल 'इन्' जुड़ता है। जैसे –

बल + इनि	–	बलिन् यानी बली (बलवान)
गुण + इनि	–	गुणिन् यानी गुणी (गुणवान)
दान + इनि	–	दानिन् यानी दानी (दान देने वाला)
माया+इनि	–	मायिन् यानी मायी (मायावाला)
ज्ञान + इनि	–	ज्ञानिन् यानी ज्ञानी (ज्ञानयुक्त)

ठक् प्रत्यय

उसे जानता है या उसको पढ़ता है आदि अनेक अर्थ में ठक् प्रत्यय का प्रयोग होता है। शब्द में जोड़ते समय केवल 'इक' जुड़ता है। जैसे –

वेद + ठक्	–	वैदिकः
लोक + ठक्	–	लौकिकः
न्याय + ठक्	–	नैयायिकः
साहित्य + ठक्	–	साहित्यिकः

पुराण + ठक् — पौराणिकः

समाज + ठक् — सामाजिकः

धर्म + ठक् — धार्मिकः

त्व प्रत्यय

इसका प्रयोग भाववाचक संज्ञा बनाने में होता है। त्व प्रत्यय युक्त शब्द नपुंसक लिंग में होते हैं। जैसे –

पशु + त्व — पशुत्वम् (पशु का गुण)

गुरु + त्व — गुरुत्वम् (गुरुता का गुण)

पुंस् + त्व — पुंस्त्वम् (पौरुष गुण)

त्रल् प्रत्यय

त्रल् प्रत्ययांत शब्द अव्यय शब्द होते हैं। इसका प्रयोग सप्तमी विभक्ति बताने के लिए सर्वनाम आदि शब्दों में होता है। जोड़ते समय केवल 'त्र' जुड़ता है। यथा – आत्मा कुत्र निवसति। आत्मा सर्वस्मिन् निवसति।

किम् + त्रल् — कुत्र (कहाँ)

अन्य + त्रल् — अन्यत्र (दूसरी जगह)

तद् + त्रल् — तत्र (वहाँ)

तमप् प्रत्यय

जब अनेक में से एक के गुण को सबसे अधिक या कम बतलाना हो तो, 'तमप्' प्रत्यय जोड़ा जाता है। यह विशेषण की उत्तमावस्था है। इसमें धातु में जोड़ते समय केवल 'तम' जुड़ता है। जैसे –

अल्प + तमप् — अल्पतमः (सबसे थोड़ा)

लघु + तमप् — लघुतमः (सबसे छोटा)

स्थूल + तमप् — स्थूलतमः (सबसे मोटा)

तरप् प्रत्यय

जब दो में से एक को गुण में दूसरे से अधिक या कम बतलाना हो तो 'तरप' प्रत्यय जोड़ा जाता है। यह विशेषण की उत्तरावस्था है। इसमें धातु में जोड़ते समय केवल 'तर' जुड़ता है।

जैसे –

अल्प + तरप्	–	अल्पतरः (तुलनात्मक रूप से थोड़ा)
लघु + तरप्	–	लघुतरः (तुलनात्मक रूप से छोटा)
स्थूल + तरप्	–	स्थूलतरः (तुलनात्मक रूप से मोटा)

धा

संख्यावाची शब्दों में 'प्रकार' अर्थ में लगने वाला प्रत्यय है। इससे बना शब्द अव्यय हो जाता है। –

एक + धा	–	एकधा (एक प्रकार से)
द्वि + धा	–	द्विधा (दो प्रकार से)
त्रि + धा	–	त्रिधा (तीन प्रकार से)
पञ्च + धा	–	पञ्चधा (पाँच प्रकार से)
बहु + धा	–	बहुधा (अनेक प्रकार से)
शत + धा	–	शतधा (सौ प्रकार से)
सहस्र + धा	–	सहस्रधा (हजारों प्रकार से)

ठञ्

उसमें होने वाला के अर्थ में यह प्रत्यय लगता है। इसमें इक शेष रहता है।

तत्काल + ठञ्	–	तात्कालिकः (उसी समय में होने वाला)
दिन + ठञ्	–	दैनिकः (रोज होने वाला)
सप्ताह + ठञ्	–	साप्ताहिकः (सप्ताह में होने वाला)
पक्ष + ठञ्	–	पाक्षिकः (पक्ष 15 दिन में होने वाला)
वर्ष + ठञ्	–	वार्षिकः (वर्ष में होने वाला)

मयट् – (मय)

वाक् + मयट्	–	वाङ्.मयम्
चित् + मयट्	–	चिन्मयम्
स्वर्ण + मयट्	–	स्वर्णमयम्

कारक प्रकरण

किसी वाक्य में अनेक शब्द होते हैं। वाक्य में जिन शब्दों का क्रिया के साथ सीधा संबंध होता है, उन शब्दों को 'कारक' कहते हैं। दूसरे शब्दों में क्रिया के सम्पादन में जो पद सहायक होते हैं, उन्हें 'कारक' कहते हैं।

यथा :–

1. कः पठति ? – छात्रः पठति। (कर्ता 'छात्र' क्रिया का सम्पादनकर्ता है)
2. किं पठति ? – संस्कृतं पठति। (कर्ता 'छात्र' क्रिया द्वारा संस्कृत (कर्म) को पाना चाहता है)
3. कथं पठति ? – मनसा पठति (कर्ता की क्रिया मन (करण) की सहायता लेता है।
4. कस्मै पठति ? – ज्ञानाय पठति। (कर्ता 'छात्र' क्रिया का ज्ञान (सम्प्रदान) प्राप्ति के लिए हो रहा है)
5. कस्मात् पठति ? – आचार्यात् पठति। (कर्ता आचार्य (अपादान) से पढ़कर ज्ञान प्राप्त करता है।
6. कस्मिन् पठति ? – विद्यालये पठति। (कर्ता 'छात्र' क्रिया का आधार विद्यालय (अधिकरण) है)

छात्रः संस्कृतं मनसा ज्ञानाय आचार्यात् विद्यालये पठति इस वाक्य में निहित पदों का किसी न किसी रूप में 'पठति' क्रिया से संबंध है। अतः ये सभी कारक पद हैं। इन्हें क्रमशः कर्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान और अधिकरण कारक कहते हैं।

इस प्रकार संस्कृत में छः कारक होते हैं :–

कर्ता कारक	कर्म कारक
करण कारक	सम्प्रदान कारक
अपादान कारक	अधिकरण कारक

"कर्ता कर्म करणं च सम्प्रदानं तथैव च,
अपादानाधिकरणे इत्याहुः कारकाणि षट्"

संस्कृत में 'सम्बन्ध' और 'सम्बोधन' को कारक नहीं माना जाता, क्योंकि क्रिया पद के सम्पादन में इनका सीधा संबंध नहीं होता। 'संबंध' में दो संज्ञाओं का संबंध होता है। जैसे :– 'सः रामस्य पुत्रोऽस्ति'। इस वाक्य में 'अस्ति' क्रिया है इस क्रिया से 'राम' का कोई संबंध नहीं है, बल्कि 'पुत्र' से संबंध है जो क्रिया नहीं, संज्ञा है। दूसरी तरफ 'सम्बोधन' प्रथमा का ही रूप है। इसका संबंध भी क्रिया से सीधा नहीं होता है। जैसे :–

"हे राम! त्वं मित्रस्य गृहं गच्छ।"

कारक और विभक्ति

क्रिया के साथ संज्ञा शब्दों का संबंध बतलाने के लिए जिन चिह्नों का प्रयोग किया जाता है वे ही 'विभक्ति' कहलाते हैं। यथा –

विभक्ति	कारक	कारक चिह्न (हिन्दी में)
प्रथमा	कर्ता	ने
द्वितीया	कर्म	को
तृतीया	करण	से, के द्वारा
चतुर्थी	सम्प्रदान	को, के लिए
पञ्चमी	अपादान	से (अलग होने के अर्थ में)
षष्ठी	सम्बन्ध	का, के, की, रा, रे, री
सप्तमी	अधिकरण	में, पर
सम्बोधन	सम्बोधन	हे, अरे

कारकों का संक्षिप्त परिचय

कर्ता कारक – जो क्रिया को सम्पादित् करता है उसे कर्ता कारक कहते हैं।

कर्तृवाच्य के कर्ता में प्रथमा विभक्ति होती है।

1) अहं पुस्तकं पठामि।

2) त्वं पाठशालां गच्छसि।

कर्मवाच्य के कर्म में प्रथमा विभक्ति होती है।

1) मया पुस्तकं पठयते। ('पुस्तकम्' प्रथमा में है)

2) त्वया पाठशाला गम्यते।

सम्बोधन में भी प्रथमा विभक्ति होती है।

1) हे बालक! किं त्वं पाठशालां गच्छसि ?

2) भो राम! अत्र आगच्छ।

कर्म कारक – कर्ता अपनी क्रिया के द्वारा जिसको सबसे अधिक चाहता है, उसे 'कर्म कारक' कहते हैं। कर्म कारक में द्वितीया विभक्ति होती है। जैसे :– ''आवाम् ईश्वरं भजावः।'' इस वाक्य में 'आवाम्' कर्ता है और 'भजावः' क्रिया पद द्वारा 'ईश्वर' को सर्वाधिक रूप से पाना चाहते हैं। अतः 'ईश्वर' कर्म कारक है और उसमें द्वितीया विभक्ति है।

अन्य उदाहरण –

ते प्रश्नं पृच्छन्ति।

युवां ग्रामं गच्छथः।

शिशुः दुग्धं पिबति।

सीता आपणम् अगच्छत्।

त्वम् ओदनं भक्षय।

रेखाड्.कित पदों में द्वितीया विभक्ति है।

करण कारक – कर्ता अपनी क्रिया के सम्पादन के लिए जिसकी सहायता लेता है, उसे 'करण कारक' कहते हैं। करण कारक में तृतीया विभक्ति होती है। जैसे :– ''बालकः कन्दुकेन क्रीडति।'' इस वाक्य में ''बालकः'' कर्ता कारक है। 'क्रीडति' क्रिया पद है। बालक (कर्ता) अपनी क्रिया खेलने हेतु 'कन्दुक' की सहायता लेता है, अतः 'कन्दुक' करण कारक है। 'कन्दुक' में तृतीया विभक्ति है।

उदाहरण – 1) सः नेत्राभ्याम् पश्यति।

2) अहं कलमेन निबन्धम् अलिखम्

3) बालिका द्विचक्रिकया पाठशालां गता।

कर्मवाच्य के कर्ता में तृतीया विभक्ति होती है :–

1) रामेण हतो बाली।

2) युष्माभिः पुस्तकं पठ्यते।

3) मया गृहं गम्यते।

भाववाच्य के कर्ता में तृतीया विभक्ति होती है।

1) मया सुप्यते।

2) आवाभ्याम् सुप्यते।

3) अस्माभिः सुप्यते।

सम्प्रदान कारक – कर्ता जिसको कोई वस्तु देता है या जिसके लिए कोई कार्य करता है, उसे सम्प्रदान कारक कहते हैं। उसमें चतुर्थी विभक्ति होती है। जैसे–शिक्षकः बालकाय पुस्तकं ददाति। इस वाक्य में बालक के लिए किताब दी जाती है अतः बालक सम्प्रदान कारक है। उसमें चतुर्थी विभक्ति होती है।

उदाहरण :–

राजा विप्राय धेनुं ददाति।

सर्वकारः छात्रेभ्यः वृत्तिं यच्छति।

असौ दरिद्राय वस्त्रं यच्छति।

पिता पुत्राय क्रुध्यति।

सा पत्ये गायति।

रेखांकित पदों में चतुर्थी विभक्ति है।

अपादान कारक – जिससे कोई वस्तु अलग होती है उसे अपादान कारक कहते हैं। उसमें पञ्चमी विभक्ति होती है। जैसे–वृक्षात् पत्राणि पतन्ति। इस उदाहरण में पत्ते वृक्ष से अलग होते हैं। अतः 'वृक्ष' शब्द 'अपादान कारक' है और उसमें पञ्चमी विभक्ति है।

उदाहरण :–

देवदत्तः ग्रामात् आयाति।

गङ्गा हिमालयात् प्रभवति।

माता कूपात् जलम् आनयति।

छात्राः विद्यालयात् आगच्छन्ति।

प्रासादात् बालः अवतरत्।

रेखाङ्कित पदों में अपादान कारक है और उनमें पञ्चमी विभक्ति हुई है।

सम्बन्ध – जब वाक्य में स्थित एक शब्द का दूसरे शब्द के साथ सम्बन्ध बताना होता है तो षष्ठी विभक्ति का प्रयोग होता है, जैसे :–

इदं मम पुस्तकम् अस्ति।

रामः दशरथस्य पुत्रः आसीत्।

गङ्गायाः जलं स्वच्छम् अस्ति।

रायपुरं छत्तीसगढस्य राजधानी अस्ति।

उपर्युक्त उदाहरणों में 'मम' आदि शब्दों का 'पुस्तक' आदि शब्दों से सम्बन्ध बताया गया है अतः रेखाङ्कित पदों में षष्ठी विभक्ति का प्रयोग हुआ है।

अधिकरण कारक – कर्ता के काम करने के आधार को 'अधिकरण' कारक कहते हैं। अर्थात् जिस स्थान पर कोई कार्य होता है उसे अधिकरण कहते हैं। इसमें सप्तमी विभक्ति लगती है। जैसे सिंह वने भ्रमति। इस वाक्य में 'सिंह' कर्ता के घूमने क्रिया का आधार 'वन' अधिकरण कारक है। उसमें सप्तमी विभक्ति का प्रयोग हुआ है।

उदाहरण :–

बालाः मार्गे कूर्दन्ते।

सः शय्यायां शेते।

पात्रे जलम् अस्ति।

तिलेशु तैलम् अस्ति।

नगरे शान्तिः व्याप्ता।

रेखाङ्कित पदों में अधिकरण कारक का प्रयोग हुआ है।

अशुद्धि संशोधन

संस्कृत लिखने तथा बोलने में विद्यार्थियों से जो व्याकरण की सामान्य भूलें होती हैं उनमें से कुछ अशुद्ध वाक्यों के द्वारा नीचे दी जा रही हैं। साथ में शुद्ध वाक्य भी दिए गए हैं।

लिंग, वचन और कारक की अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध
भवान् मम मित्रः असि।	भवान् मम मित्रम् अस्ति।
दशरथः प्राणं अत्यजत्।	दशरथः प्राणान् अत्यजत्।
रामो मम स्नेहपात्रः।	रामो मम स्नेहपात्रम्।
वेदाः प्रमाणानि।	वेदाः प्रमाणम्।
मित्रः मे प्राणः।	मित्रम् मे प्राणाः।
विंशत्यः बालिकाः पठन्ति।	विंशतिः बालिकाः पठन्ति।
नगरस्य परितः उद्यानमस्ति।	नगरं परितः उद्यानमस्ति।
बालकम् अध्ययनं न रोचते।	बालकाय अध्ययनं न रोचते।
रामस्य सह सीता वनमगच्छत्।	रामेण सह सीता वनमगच्छत्।
स मयि क्रुध्यति।	स मह्यं क्रुध्यति।
सर्वान् नमः।	सर्वेभ्यो नमः।
त्वम् रामश्च तत्र अगच्छताम्।	त्वं रामश्च तत्र अगच्छतम्।
त्वम् अहं च तत्र गमिष्यथ।	अहं त्वं च तत्र गमिष्यावः।
महाराज्ञः आदेशः।	महाराजस्य आदेशः।
परमात्मस्य महिमां पश्य।	परमात्मनः महिमानं पश्य।
भवानस्य किं नाम।	भवतः किं नाम।
स चन्द्रमां पश्यति।	स चन्द्रमसं पश्यति।

अम्बे! त्राहि माम्।	अम्ब! त्रायस्व माम्।
अर्जुनोवाच।	अर्जुन उवाच।
हे देवागच्छ।	हे देव! आगच्छ।
बालो सुखेन शेते।	बालः सुखेन शेते।
तरुछायां सेवते।	तरुच्छायां सेवते।

सर्वनाम तथा विशेष्य और विशेषण की अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध
इमं पुस्तकं पश्य।	इदं पुस्तकं पश्य।
सर्वाः नराः गच्छन्ति।	सर्वे नराः गच्छन्ति।
स इमं स्त्रीमपश्यत् स।	इमां स्त्रीमपश्यत्।
किंचिदन्यं वद।	किंचिदन्यद् वद।
सर्वासाम् प्रियो हरिः।	सर्वेषाम् प्रियो हरिः।
त्रयः सुन्दराः बालिका।	तिस्रः सुन्दर्यः बालिकाः।
मे भ्राता पठति।	मम भ्राता पठति।
स महति विपदि वर्तते।	स महत्यां विपदि वर्तते।

वर्ण तथा अव्ययों की अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध
धनमान् बुद्धिवन्तं निन्दति।	धनवान् बुद्धिमन्तं निन्दति।
फलं गृहीतुम् इच्छामि।	फलं ग्रहीतुम् इच्छामि।।
धनुः सु शरान् योजय।	धनुषु शरान् योजय।
स मिथ्यां वदति।	स मिथ्या वदति।
रामः च शिवः गच्छतः।	रामः शिवश्च गच्छतः।

क्रिया में काल तथा आत्मनेपद परस्मैपद सम्बन्धी अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध
त्वया गम्यसे	त्वया गम्यते।
अहं तत्र स्थामि	अहं तत्र तिष्ठामि।
सः चन्द्रं दृश्यति	सः चन्द्रं पश्यति।
राज्ञा प्रजाः पाल्यते	राज्ञा प्रजाः पाल्यन्ते।
छात्राः प्रश्नं जिज्ञासन्ति	छात्राः प्रश्नं जिज्ञासन्ते।

कृदन्त प्रत्ययों की अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध
भिक्षां ददन् बालः हसति	भिक्षां ददत् बालः हसति।
गृहम् आगत्वा पठामि	गृहम् आगत्य पठामि।
रामः गुरुं सेवन् तिष्ठति	रामः गुरुं सेवमानः तिष्ठति।
त्वया वचांसि श्रोतव्यम्	त्वया वचांसि श्रोतव्यानि।
स पुष्पं दृष्टः	तेन पुष्पं दृष्टम्।

स्त्री प्रत्ययान्त पदों की अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध
बालः हंसां पश्यति	बालः हंसीं पश्यति।
सा अश्वी गच्छति	सा अश्वा गच्छति।
नृत्यती बाला शोभते	नृत्यन्ती बाला शोभते।
मया रुदन्ती नारी दृष्टा	मया रुदती नारी दृष्टा।

अपठितगद्यांशः

(1) भारतवर्षे षड् ऋतवः भवन्ति। तेषां वसन्तः प्रथमः अस्ति। वसन्तकालः मनोरमः वर्तते। एतस्मिन् समये न अति ऊष्मा न वा अति शीतलता। वसन्तकाले सुखदायकः अनिलः प्रवहति। वृक्षेषु लतासु सुन्दराणि विविधवर्णानि कुसुमानि शोभन्ते। पलाशपुष्पैः वनस्थली आरक्ता जायते। अस्मिन् काले क्षेत्राणि सस्यपूर्णानि दृश्यन्ते। जनाः नवान्नदर्शनेन प्रमुदिताः भवन्ति। ते फाल्गुनमासे होलिकोत्सव मन्यन्ते। ते सोल्लासं परस्परं मिलन्ति रागैः क्रीडन्ति च। एतस्मिन् ऋतौ प्रातः भ्रमणेन स्वास्थ्यं पुष्टं जायते। वसन्तकालः आनन्दोल्लासस्य कालः।

(2) परेषां उपकारः इति परोपकारः। प्रकृतिः अपि परोपकारं करोति। वृक्षाः परोपकाराय फलन्ति। नद्यः परोपकाराय वहन्ति। ताः शीतलं जलं दत्वा जीवनदानं ददति। मेघाः अपि परोपकाराय वर्षन्ति। सूर्यचन्द्रनक्षत्रादयः च सर्वे परोपकारे संलग्नाः वर्तन्ते। परोपकारिणः सर्वस्वप्रियः भवति। परोपकाराय जनाः सदैव परकल्याणं कुर्वन्ति। परोपकारिणः जीवनं परहितार्थं समर्पितं भवति। वयं परोपकारं कुर्याम।

(3) यः ज्ञानं यच्छति शास्त्राणि शिक्षयति च सः शिक्षकः। ऋषिः आचार्यः गुरुः, अध्यापकः, उपाध्यायश्च इति अपि तस्य नामानि। भारतवर्षे प्राचीनकालादेव शिक्षकाय अति महत्वं प्रदत्तम्। तस्य स्थानं राज्ञः अपि उच्चतमम्। शिक्षकं बिना ज्ञानप्राप्तिः न सम्भवा। कवयः तं ईश्वरात् अपि श्रेष्ठः मन्यन्ते। अधुना भारतस्य राष्ट्रपतिना श्रेष्ठाः शिक्षकाः पुरस्क्रियन्ते। तस्मै श्रीगुरवे नमः।

(4) हिमालयः पर्वतेषु उच्चतमः। सः भारतवर्षस्य उत्तरदिशि तिष्ठति। सः वर्षपर्यन्तं हिमाच्छादितः अतः तस्य नाम हिमालयः। माउंट एवरेस्ट' इति नाम तस्य तुङ्गतमं शिखरम्। हिमालयात् गंगादयः अनेकाः नद्यः प्रभवन्ति। तासां जलं भारतीयानां जीवनम्। अतः हिमालयः भारतीयेभ्यः देवस्थानम् इव। तत्र अनेकानि तीर्थस्थानानि। बहवः तापसाः तत्र तपस्यां कुर्वन्ति। हिमालयः अस्माकं रक्षकः पोषकश्च।

(5) भारतवर्षे बहवः उत्सवाः सन्ति। अत्र वर्षपर्यन्तम् उत्सवाः भवन्ति। तेषु प्रमुखतमा दीपावली। एषः उत्सवः कार्तिकमासे कृष्णपक्षे अमावस्यां भवति। एतदर्थं जनाः स्वगृहाणि स्वच्छीकुर्वन्ति सुधया अवलिम्पन्ति। एतस्मिन् दिवसे विविधानि मिष्ठान्नानि पच्यन्ते। सन्ध्याकाले सर्वे नूतनवस्त्राणि धारयन्ति। धार्मिकाः जनाः लक्ष्मीदेवीं पूजयन्ति। ते दीपमालिकाभिः स्वगृहाणि सज्जीकुर्वन्ति। अतएव अस्य उत्सवस्य नाम् दीपावली इति। एषः उत्सवः ऋतुपरिवर्तनस्य नवधान्यप्राप्तेः च सूचयति।

(6) अस्माकं देशः भारतवर्षः अस्ति। भारतवर्षस्य भूमिः भारतीयानां जननी। वयं सर्वे भारतीयाः स्मः। अस्माकं भारतभूमिः सुजला सुफला सस्यश्यामला च। वयं अस्याः अन्नं जलं च गृहीत्वा मोदामहे। अस्माकं देशे हिमालयादयः अनेके पर्वताः सन्ति। पर्वतेभ्यः गंगादयः नद्यः प्रवहन्ति। एताः नद्यः भारतमहासागरे मिलन्ति। नदीनां तटेषु बहूनि तीर्थस्थानानि सन्ति। सुष्ठु उच्यते – जननी जन्मभूमिष्च स्वर्गादपि गरीयसी।

(7) कालिदासः कवीनां श्रेष्ठः कवि उच्यते। सः संस्कृतभाषायां सप्तग्रन्थान् अरचयत्। द्वे महाकाव्ये रघुवंशं कुमारसंभवं च। द्वे खण्डकाव्ये ऋतुसंहारः मेघदूतञ्च। त्रीणि नाटकानि मालविकाग्निमित्रं विक्रमोर्वशीयम् अभिज्ञानशाकुन्तलञ्च। एतत् शाकुन्तलं विदेशेषु अपि लोकप्रियमस्ति। कालिदासस्य उपमा प्रसिद्धा अस्ति। तस्य जन्मकालविषये जन्मस्थानविषये च विवादः वर्तते। किन्तु तस्य उज्जयिनीनगरेण सह घनिष्ठः सम्बन्धः इति निर्विवादः। अतः प्रतिवर्षः मध्यप्रदेशे उज्जयिन्यां कालिदासमहोत्सवः भवति।

पत्रलेखनम्

पितरम् प्रति पुत्रस्य पत्रम्

बिलासपुरतः
दिनाङ्कः ....

माननीय पितः,

चरणारविन्दयोः प्रणामाः।

मया भवतः पत्रं प्राप्तम्। अवगतं च निखिलं वृत्तम्। अहम् अध्ययनकर्मणि संलग्नोऽस्मि। अस्मिन्नेव मासे परीक्षा भविष्यति। अध्ययनं संतोषप्रदमस्ति तथापि वेपते मम हृदयम्।

परीक्षानन्तरं यथाशीघ्रं गृहम् आगमिष्यामि। अतएव यात्राव्ययार्थं पञ्चविंशतिरूप्यकाणि शीघ्रं प्रेषणीयानि।

भवान् मान्यायाः मातुः चरणयोः मम प्रणतिं कथयतु। गृहे गुरुजनेभ्यः नमः स्वस्ति च कनिष्ठाय। अन्यत् सर्वं कुशलम्। यदि किमपि नूतनं वृत्तं ग्रामस्य गृहस्य वा तदपि लेखनीयम्।

भवदीयः स्नेहपात्रः
लोचनः

पुत्रम् प्रति पितुः पत्रम्

बस्तरतः
दिनाङ्कः ....

प्रियवत्स लोचन!

शतं शुभानि भूयासुः।

गृहात् विद्यालयं गतस्य तव पञ्चदशदिवसाः व्यतीताः, किन्तु नैकमपि पत्रं प्राप्तम्। येन वयं चिन्ताग्रस्ताः स्मः। त्वदीया माता तु अति व्याकुला अस्ति।

किं छात्रावासे स्थानलाभः जातः न वा ? इति ज्ञातुम् इच्छामि। कदा भविष्यति ते वार्षिकपरीक्षा? सावधानचेतसा पठितव्यम्। न कदापि वृथा कालः क्षेपणीयः। रात्रौ जागरणमपि शरीरं रोगग्रस्तं करोति। शरीरमाद्य खलु धर्मसाधनमित्यस्ति साधुवचनम्।

आशासे यत् त्वं तत्र प्रसन्नः असि। सर्वमिदं शीघ्रं सूचनीयम्।

अत्र सर्वे कुशलिनः। शुभमिति।

त्वदीयः
जगदेवः

मातरम् प्रति तनयायाः पत्रम्

सरगुजातः

दिनाङ्कः ....

श्रीमत्याः मातुश्चरणयोः

सादरं प्रणामाः।

अत्र कुशलं तत्रास्तु। भवदीयं कृपापत्रं अधिगतम् कुशलं समाचारैः अवगता अस्मि। सम्प्रति स्वाध्याये दत्तचित्ता अहम्।

अस्माकं प्रधानाचार्यः अति सरलः गम्भीरः एवं व्यवहारकुशलः अस्ति। सः छात्रान् छात्रांश्च पुत्र–पुत्रीवत् स्निह्यति, अस्माकं हितान् संरक्षति। अतो हि भवत्या काऽपि चिन्ता न विधेया।

संस्कृतस्य अध्ययनं प्रति मम विशिष्टा प्रवृत्तिः अस्ति। आशासे वार्षिकपरीक्षायां प्रथमश्रेण्यां सफला भविष्यामि। परीक्षानन्तरं गृहम् आगमिष्यामि।

श्रीमतः पितुश्चरणयोः मम नमनम् वाच्यम्। कृपया पत्रोतरं शीघ्रं देहि।

भवदाज्ञाकारिणी पुत्री

आयता

मित्रस्य मित्रं प्रति पत्रम्

जशपुरतः

दिनाङ्कः ....

प्रिय मित्र संजय!

नमस्ते।

अत्र कुशलं तत्रास्तु। तव प्रेमपत्रं प्राप्य अतीव प्रसन्नोऽस्मि। ईश्वरस्य अनुकम्पया वयमपि अत्र कुशलिनः। मम विद्यालये ग्रीष्मावकाशः 13.5.2015 तिथेः प्रारम्भः भविष्यति। तव विद्यालयः कदा पिधास्यते?

अस्मिन् वर्षे ग्रीष्मावकाशे सपरिवारोऽहम् नैनीतालं गन्तुं इच्छामि। नगरमेतत् परं रमणीयम्। अतएव त्वमपि मया सह नैनीतालम् आगच्छ। आशासे यत् अत्रागमनेन त्वं माम् अनुगृहीतं करिष्यसि।

कुशलमन्यत्। परिचितेभ्यो नमः। पत्रोत्तरं देहि शीघ्रम्।

तव बन्धुः

रजनीकान्तः।

अवकाशार्थं प्रार्थनापत्रम्

सेवायाम् दिनाङ्कः ....

श्रीमान् प्राचार्यमहोदयः

शासकीयउच्चतरमाध्यमिकविद्यालयः

बस्तरम्

विषय :– दिनत्रयस्य अवकाशाय प्रार्थनापत्रम्

महोदयः,

सविनयं निवेदनम् अस्ति यत् अहम् ज्वरेण पीडिता अस्मि। अतः विद्यालयमागन्तुं न शक्नोमि। कृपया दिनत्रयस्यावकाशं स्वीकृत्य मामनुग्रहीष्यति।

सधन्यवादः

भवतां शिष्या

सरमा

कक्षा नवमी

निबन्धाः

विद्यालयः

एषः मम विद्यालयः।

अयं मम गृहस्य समीपे वर्तते।

मम कक्षायां पञ्चत्वारिंशत् छात्राः सन्ति।

मम विद्यालये एकः प्रधानाचार्यः अस्ति।

मम विद्यालये द्वादशः अध्यापकाः सन्ति।

ते स्वविषये प्रवीणाः सन्ति।

ते अस्मान् स्नेहेन पाठयन्ति।

मम विद्यालये एकः पुस्तकालयः अस्ति।

तत्र विविधानि पुस्तकानि सन्ति।

वयं तत्र गत्वा पुस्तकानि पठामः।

मम विद्यालये एकं मनोहरम् उद्यानमस्ति।

धेनुः

धिनोति प्रीणयति इति धेनुः।

जनाः धेनुं गौमाता अपि कथन्ति।

भारतदेशे गृहे गृहे धेनवः पालयन्ति।

धेनूनां चत्वारः पादाः भवन्ति।

तस्याः द्वे श्रृङ्.गे एकं लाङ्.गूलं च भवति।

धेनूनां विविधाःवर्णाः भवन्ति।

धेनवः तृणानि खादित्वा मधुरं पयः प्रयच्छन्ति।

धेनोः दुग्धेन, दधि, तक्रं, नवनीतं, धृतं च निर्मीयते।

धेनोः दुग्धं मधुरं पथ्यं हितकारि च भवति।

धेनोः वत्साः वलीवर्दाः भवन्ति।

सरस्वती

सरस्वती विद्यायाः देवी अस्ति।

एषा श्वेतपद्मासने विराजते।

एषा शरीरे शुभ्रं वस्त्रं धारयति।

अस्याः कण्ठे रत्नहाराः विलसन्ति।

अस्याः मस्तके किरीटं शोभते।

किरीटं रत्नखचितं वर्तते।

एषा वामेन हस्तेन वीणायाः दण्डं धारयति।

सरस्वत्याः वाहनं हंसः इति कथ्यते।

हंसस्य धवलः वर्णोऽपि चरित्रस्य उज्जवलतां बोधयति।

अस्याः हस्ते पुस्तकं ज्ञानस्य प्रतीकमस्ति।

उद्यानम्

एतद् उद्यानम् अस्ति।

अत्र विविधाः वृक्षाः रोहन्ति।

वृक्षाः पर्णैः पुष्पैः च शोभन्ते।

पक्वानि फलानि अपि वृक्षाणां भूषणानि।

जनाः वृक्षाणां फलानि भक्ष्यन्ति।

उपवने लताः अपि रोहन्ति।

उपवने विविधानि वर्णानि पुष्पाणि अपि सन्ति।

पुष्पेषु भ्रमराः गुञ्जन्ति मधुपानं च कुर्वन्ति।

बालकाः उद्याने खेलन्ति प्रभाते सायंकाले च।

जनाः उद्याने शान्तिम् अनुभवन्ति।

पुस्तकम्

एतद् मम पुस्तकम् अस्ति।

एतद् तव पुस्तकम् अस्ति।

एतानि सर्वाणि पुस्तकानि सन्ति।

मम पुस्तके चित्राणि सन्ति।

एतानि चित्राणि रम्याणि सन्ति।

रमणीयं चित्रं मम चित्तं आनन्दयति।

सचित्रं पुस्तकं मम प्रियम्।

अहं पाठशालां गच्छामि पुस्तकं नयामि च।

पुस्तकैः ज्ञानं लभ्यते।

पुस्तकानि अस्माकं मित्राणि सदृशानि भवन्ति।